# अगस्त्य संहिता

## रामोपासना का प्राचीनतम आगमशास्त्र

सम्पादक

पं. भवनाथ झा

पत्राद्बहिः प्रदेशेतुरत्नाकारं यथा लिखेत् सर्वदुष्टोपशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् ७८ आयुरारोग्य
मैश्वर्यं पुत्रपौत्रप्रवर्द्धनम् सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके स गच्छति ७९ इत्यगस्त्यसंहिता
यां परमरहस्ये हनुमन्मंत्र च श्रीरामकवचोद्धारकथनं नाम द्वात्रिंशोध्यायः ॥ ३२ श्लोकसंख्या २०००
लिख्यतं लाला सीताराम श्री चित्रकूटस्थस्थाने श्री रामजी रामघाट मंदाकिनी मे सुरनी तटे संगमे: ॥
पुस्तकं श्री श्री श्री श्री महंत आचार्य वलभद्रदासजी की वैसाख वदि १२ संवत् १९०२ रामः रामः रामः

महावीर मन्दिर प्रकाशन

महावीर मन्दिर प्रकाशन माला का 25वाँ पुष्प

# अगस्त्य-संहिता

रामोपासना का प्राचीनतम वैष्णवागमशास्त्रीय ग्रन्थ

सम्पादक

पं. भवनाथ झा

आमुख लेखन

आचार्य किशोर कुणाल

महावीर मन्दिर प्रकाशन

प्रकाशक :

**महावीर-मन्दिर-प्रकाशन**

पाणिनि परिसर, बुद्धमार्ग, पटना-800 001

प्रथम संस्करण

श्रीकृष्णजन्माष्टमी, संवत् 2066 (2009 ई0)



मूल्य : पेपरबैक – 50 रुपये

पुस्तकालय संस्करण– 200 रुपये

प्राप्तिस्थान :

**धर्मग्रन्थ विक्रय केन्द्र,**

महावीर मन्दिर, पटना

मुद्रक :

प्रकाश ऑफसेट, धरहरा कोठी, पटना

**प्राधान्येन पूज्येन अङ्गत्वे रामपीठके।**
**हनूमतोप्येवमेव कुर्यात् पूजामतन्द्रितः।।29।।**

मुख्य रूप से श्रीराम के पीठ पर अंग देवता के रूप में हनुमान् की भी इस प्रकार से आलस्य छोड़कर पूजन करें।

**पूर्वं नमः पदं चोक्त्वा ततो भगवते पदम्।**
**आञ्जनेयपदं ङेन्तं महाबलपदं तथा।।30।।**
**वह्निजायान्त एव स्यान्मन्त्रो हनुमतः परम्।**
**सर्वसिद्धिकरः प्रोक्तः सर्वेषामपि सर्वदा।।31।।**
**मालाख्यः परमो मन्त्रो मारुतेः सर्वसिद्धिदः।**

पहले 'नमः' बोलकर तब 'भगवते' यह पद बोलें। इसके बाद चतुर्थी विभक्ति में 'आञ्जनेय' पद (आञ्जनेयाय) कहें तब वैसे ही महाबल पद (अर्थात् महाबलाय) कहें। इसके अन्त में वह्निजाया (स्वाहा) लगावें। इस प्रकार "नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा"- यह हनुमान का मन्त्र है। इसे सबके के लिए सदा सभी सिद्धियाँ देनेवाला कहा गया है। यह सभी सिद्धियाँ देनेवाला हनुमान् का माला मन्त्र है।

**लक्ष्मणस्तु सदा पूज्यः प्राधान्येनैव नित्यशः।।32।।**
**यथा रामस्य पूजा स्यात् तथा तस्यापि नित्यशः।**
**वैष्णवं न्यासजालं च सर्वं कृत्वा समाहितः।।33।।**
**भूतशुद्धिं विधायैव मातृकापि प्रयत्नतः।**
**विधाय मानसीं पूजां बाह्यपूजामपि द्वयम्।।34।।**
**त्रिकालमेककालं वा नित्यमेकान्तमाश्रितः।**

प्रधान देवता के रूप में प्रतिदिन लक्ष्मण की पूजा करें। जिस प्रकार श्रीराम की पूजा प्रतिदिन होती है उसी प्रकार लक्ष्मण की भी पूजा होनी चाहिए। सभी वैष्णव न्यास कर मानस-पूजा कर तीनों कालों में या एक काल प्रतिदिन एकान्त में रहते हुए पूजन करें।

**साफल्यं रामपूजाया च इच्छेन्नियतव्रतः।।35।।**
**तेन यत्नेन कर्त्तव्या लक्ष्मणस्यापि विस्तरात्।**

श्रीराम पूजा की सफलता की इच्छा जो रखते हों, वे नियम का पालन करते हुए यत्नपूर्वक लक्ष्मण की पूजा भी विस्तार से करें।

**श्रीराममन्त्रभेदास्तु बहवः सन्ति वै मुने।।36।।**
**तत्साधकैस्सदा कार्य्या सौमित्रेरपि सर्वशः।**
**परं ब्रह्मापि लोकेस्मिन् रामलक्ष्मणसंज्ञया।।37।।**
**आविर्भूय च कात्स्न्र्येन सेव्यतां तु द्वयं सदा।**

श्रीराम के मन्त्र अनेक प्रकार के हैं। उन मन्त्रों के जो साधक हैं, वे सदा हर प्रकार से लक्ष्मण की पूजा करें। परम ब्रह्म इस संसार में श्रीराम और लक्ष्मण के नाम से अंग के रूप में प्रकट हुए हैं, अतः दोनों की सदा सेवा करें।

**अष्टोत्तरसहस्त्रं वा शतं वा सुसमाहितः।।38।।**
**लक्ष्मणस्य मनुर्जप्यो मुमुक्षुभिरतन्द्रितैः।**

एक हजार आठ अथवा एक सौ आठ बार एकाग्र होकर आलस्य का त्याग कर मोक्षार्थियों को लक्ष्मण के मन्त्र का जप करना चाहिए।

**तारकं ब्रह्म लोकेऽस्मिन् यथा सेव्यो मुमुक्षुभिः।।39।।**
**तथैव लक्ष्मणमनुः सदा सेव्यो भवेदिह।**

जिस तरह तारक ब्रह्म मोक्षार्थियों का पूज्य है, उसी प्रकार लक्ष्मण का भी मन्त्र इस संसार में सेव्य होना चाहिए।

**दशाक्षरादिमन्त्राणां साफल्यस्यापि कांक्षया।।40।।**
**सेव्योऽयं सर्वदा मन्त्र ऐहिकामुष्मिकप्रदः।**

दशाक्षर आदि मन्त्रों की सफलता की इच्छा से भी यह मन्त्र हमेशा जप करने योग्य है, जो संसार में और परलोक में कामनाओं को पूर्ण करता है।

**अजप्त्वा लक्ष्मणमनुं राममन्त्रा जपन्ति ये।।41।।**
**तज्जप्तस्य फलं नैव प्रयान्ति कुशला अपि।**
**अरिमित्रविवेकोऽपि नैव कार्यो भवेदिह।।42।।**

लक्ष्मण का मन्त्र जप किए विना जो श्रीराम का मन्त्र जपते हैं, उस जप का फल वे अच्छे साधक भी प्राप्त नहीं करते हैं। इस मन्त्र में शत्रु और मित्र का भी विचार नहीं होना चाहिए।

रामपूजारतैर्नित्यं सदा सेव्योऽयमञ्जसा।
यो जपेल्लक्ष्मणमनुं नित्यमेकान्तमास्थितः।।43।।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो स कामानश्नुतेऽखिलान्।

श्रीराम की पूजा में लीन साधकों को इस मन्त्र का विधानपूर्वक जप करना चाहिए। जो प्रतिदिन एकान्त में रहते हुए लक्ष्मण-मन्त्र का जप करतें हैं वे सभी पापों से मुक्त होकर सभी कामनाओं का भोग करते हैं।

मनोवाक्कायकर्माद्यैरत्यन्तैरप्यनेकशः ।।44।।
महद्भिरपि पापौघैर्मुच्यते नात्र संशयः।
सर्वान् कामानवाप्नोति यान्ति विष्णोः परं पदम्।।45।।

मन, वाणी, शरीर और क्रिया से अनेक बार जो महान् पाप किए गये हो उस समूह से पाप मुक्त हो जाता है साधक, इसमें सन्देह नहीं। वह सभी कामनाओं को प्राप्त करता है और विष्णु के परमधाम को चला जाता है।

इत्यगस्त्यसंहितायां परमरहस्ये लक्ष्मणादिपूजनविधिर्नाम त्रिंशोऽध्यायः।

## एकत्रिंऽशोध्यायः

### अगस्त्य उवाच

पुरोदितस्य मन्त्रस्य प्रयोगानखिलाञ्जसा[1]।
कथयामि यथाशक्ति सरहस्यं सुविस्तरम्।।1।।
प्रयोगायैव मन्त्रोऽयमुपदिष्टोऽथ शार्ङ्गिणा।
अर्जुनस्य पुरा सर्गे तेनैव[2] धनञ्जयः।।2।।
दिशो विजित्य सकलाः स कुरून् एक एव हि।
प्रातिष्ठिपद्धर्मराजं पैतृके राज्य उत्तमे।।3।।

अगस्त्य बोले- पूर्व में कहे गये मन्त्रों के रहस्य के साथ अपनी शक्ति के अनुसार मैं उनके प्रयोगों को विस्तारपूर्वक कहता हूँ। ये मन्त्र इससे पूर्व की सृष्टि में भगवान् विष्णु के द्वारा अर्जुन को प्रयोग करने के लिए ही दिये गये थे और उन मन्त्रों के द्वारा ही अर्जुन ने अकेले ही सभी दिशाओं और कुरुओं को जीत कर धर्मराज युधिष्ठिर को अपने उत्तम पैतृक राज्य में स्थापित किया।

1. घ. प्रयोगोऽहमञ्जसा।2. घ. अर्जुनस्य पुरा सम्यगनेनैव धनञ्जयः।

**जपप्रधानो मन्त्रोऽयं राज्यप्राप्त्यैकसाधनम्।**
**यो जपेन्नियतो मन्त्रं लक्षमेकं समाहितः।।4।।**
**सोऽचिरान्नष्टराज्यं स्वं प्राप्नोत्येव न संशयः।**

इस मन्त्र में जप की प्रधानता है। यह राज्यप्राप्ति का साधन है। जो नियमपूर्वक एकाग्र होकर इस मन्त्र का एक लाख जप करते हैं, वे शीघ्र ही अपने नष्ट राज्य को प्राप्त करते हैं, इसमें सन्देह नहीं।

**अभिषिक्तमयोध्यायां ध्यायेद्राममनन्यधीः।।5।।**
**पंचायुतमिदं जप्त्वा नष्टराज्यमवाप्नुयात्।**

अयोध्या में राज्याभिषिक्त श्रीराम का ध्यान करें और एकाग्र होकर पचास हजार मन्त्र का जप कर अपने नष्ट राज्य को पावें।

**नागपाशविनिर्मुक्तं ध्यायन्नेकान्त आस्थितः।।6।।**
**जप्त्वायुतं प्रमुच्येत निगडायैस्तदेव हि।**

नागपाश से विमुक्त श्रीराम का ध्यान करते हुए एकान्त में रहकर दस हजार जप कर बेड़ी के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

**आञ्जनेयसमानीतैरोषधीभिर्गतव्यथम् ।।7।।**
**ध्यायन्नयुतजायेन स्वापमृत्युं जयेन्नरः।**

हनुमानजी के द्वारा लायी गयी औषधियों के प्रभाव से कष्ट से मुक्त श्रीराम का ध्यान करते हुए दस हजार जप करने से मनुष्य अपनी अपमृत्यु को जीत लेता है।

**इन्द्रजित्प्राणहन्तारं ध्यायन्नेव समाहितः।।8।।**
**दुर्जयं चापि वेगेन जयेदरिकुलं बहु।**

मेघनाद का वध करनेवाले श्रीलक्ष्मण का ध्यान करते हुए एकाग्र होकर जप करने से शीघ्र ही बहुत सारे दुर्जय शत्रुओं को जीत लेते हैं।

**शूर्पणख्याश्च नासाग्रछेदनोद्युक्तमानसम्।।9।।**
**ध्यायन् सहस्त्रजापेन पुरहूतादिकान् जयेत्।**

शूर्पणखा की नाक काटने के लिए उन्मुख श्री लक्ष्मण का ध्यान करते हुए एक हजार जप करने से इन्द्र आदि को भी जीत लेते हैं।

रामपादाब्जसेवार्थं कृतद्वारमथ स्मरन्।।10।।
जपन्नयुतमेकान्ते महारोगान् बहून्यपि।
क्षयापस्मारकुष्ठादीन्नाशयत्येव तत्क्षणात्।।11।।

श्रीराम के चरणकमल की सेवा करने के लिए द्वार बनाकर अवस्थित श्री लक्ष्मण का ध्यान करते हुए एकान्त में जप करते हुए साधक अनेक महारोगों को जीत लेते हैं।

त्रिमासं नियताहारो जपेत् सप्तसहस्त्रकम्।
दिने दिने विधानेन युगपद् विजितेन्द्रियः।।12।।
अष्टोत्तरशतैः पुष्पैः निच्छिद्रैः शतपत्रकैः।
पायसं शर्करोपेतं नैवेद्यं विधिवन्मुने।।13।।
घनसारसमायुक्तं चन्दनेनावलिप्य च।
देवोद्देशेन नित्यं च सम्पूज्यैव द्विजोत्तम।।14।।
कुष्ठरोगात् प्रमुच्येत दुःचिकित्स्यादनेकशः।
दुर्दोषजा बहुविधा मण्डलादिप्रभदेतः।।15।।
ते सर्वे नाशमायान्ति दुःचिकित्स्या अपि क्षणे।

तीन मास तक संयमित भोजन करते हुए प्रतिदिन सात हजार जप विधानपूर्वक कर के साथ साथ छिद्र रहित एक सौ आठ कमल के फूलों से तथा शक्कर के साथ पायस (खीर) नैवेद्य समर्पित कर, कर्पूर के साथ चन्दन से देवता का लेपन कर प्रतिदिन पूजा करके साधक कुष्ठ रोग से मुक्त हो जाता है। अन्य अनेक असाध्य रोग, मण्डल आदि अनेक प्रकार के रोग जो बुरे दोषों से उत्पनन होते हैं वे सभी क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं।

एकान्ते नियताहारः षण्मासान् विजितेन्द्रियः।।16।।
जपन्नेवं विधानेन क्षयरोगात्प्रमुच्यते।

एकान्त में संयमित आहार लेकर छह मास तक इन्द्रियों को वश में कर के इस प्रकार जप करते हुए क्षय रोग से मुक्ति मिलती है।

मासं पूपादिनैवेद्यैः जपन्मन्त्रं समाहितः।।17।।
वातरोगात्प्रमुच्येत बहुभेदादपि क्षणात्।

एक मास तक पुआ आदि नैवेद्य समर्पित करते हुए एकाग्र होकर जप करने से अनेक प्रकार के बात रोगों से क्षण भर में मुक्ति मिल जाती है।

**अभिमन्त्र्य जलं नित्यं मन्त्रेण त्रिः समाहितः।।18।।**
**पीत्वा सन्ध्यासु भक्त्या वै मुच्यते सर्वरोगतः।**
**दारिद्र्यं नाशयित्वा तु श्रियमाप्नोति सुव्रत।।19।।**

मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रतिदिन तीन बार ध्यानस्थ होकर तीनों सन्ध्याओं में भक्तिपूर्वक पीने से सभी रोगों से मुक्ति मिल जाती है। वह अपनी दरिद्रता का नाश कर लक्ष्मी प्राप्त करता है।

**विषादिदोषसंस्पर्शो न भवेच्च कदाचन।**
**प्रक्षाल्यैवं प्रतिदिनं मुखं भक्त्या समाहितः।।20।।**
**मुखनेत्रादिसम्भूतान् जयेद्रोगान् सुदारुणान्।**
**पीत्वाभिमन्त्रितं वारि कुक्षिरोगान् जयेद् बहून्।।21।।**

उसे विष आदि दोषों का स्पर्श भी नहीं होता। इस अभिमन्त्रित जल से जो प्रतिदिन भक्तिपूर्वक अपने मुख का प्रक्षालन करते हैं, वे मुख। नेत्र आदि के अनेक रोगों की जीत लेते हैं और उस अभिमन्त्रित जल को पीकर कोख सम्बन्धी रोगों को जीत लेते हैं।

**देवस्य प्रतिमादानं कृत्वा भक्त्या विधानतः।**
**सर्वेभ्योप्यथ रोगेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।।22।।**

भक्तिपूर्वक तथा विधानों के साथ देवता की प्रतिमा का दान करनेवाले सभी रोगों से मुक्त हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं।

**कन्यार्थी चोर्मिलापाणिग्रहणासक्तमानसम्।**
**लक्ष्मणमनुर्जप्त्वा हुत्वा लाजैर्दशांशकम्।।23।।**
**ईप्सितां प्राप्नुयात् कन्यां शीघ्रमेव तपोधन।**

पत्नी की इच्छा रखनेवाले साधक उर्मिला का पाणिग्रहण करने के लिए आसक्त चित्त वाले लक्ष्मण का ध्यान कर धान के खील (लाबा) से उसका दशांश हवन कर शीघ्र ही अभीष्ट पत्नी को प्राप्त करते हैं।

दीक्षितं स्तम्भनास्त्राणां[1] मन्त्रेषु नियतव्रतः।।24।।
संस्मरन् विधिवन्नित्यं मासत्रयमनन्यधीः।
पूजापुरस्सरं सप्तसहस्त्रं विजितेन्द्रियः।।25।।
जपन्नखिलविद्यानां तत्त्वज्ञो भवति ध्रुवम्।

'स्तम्भन' नामक अस्त्र के सन्धान में दीक्षित श्रीराम का स्मरण करते हुए नियमपूर्वक, जितेन्द्रिय होकर तीन मास तक पूजन करते हुए मन्त्र का सात हजार जप करता हुआ साधक सभी विद्याओं का तत्त्वज्ञ बन जाता है।

विश्वामित्रक्रतुवरे कृताद्भुतपराक्रमम्।।26।।
ध्यायन्नयुतजापेन भयेभ्यो मुच्यतेऽचिरात्।
सन्ध्यां चोपास्य विधिवन्मूलमन्त्रेण मन्त्रवित्।।27।।
त्रिकालं नियतो भूत्वा कृतनित्यविधिः स्वयम्।
दीक्षायुतो यथान्यायं गुर्वनुज्ञापुरस्सरम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो याति विष्णोः परं पदम्।।28।।

विश्वामित्र मुनि के विशाल यज्ञ में अद्भुत पराक्रम दिखानेवाले श्रीराम का ध्यान करते हुए दस हजार जप करने से सभी प्रकार के भय से मुक्त हो जाते हैं। विधान पूर्वक मूलमन्त्र से तीनों समयों में सन्ध्यावन्दन कर मन्त्रज्ञानी नित्यकर्मों को सम्पन्न कर गुरु की आज्ञा से जप करते हुए सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं तथा विष्णु के परम स्थान को प्राप्त करते हैं।

ऐहिकाननपेक्ष्यैव निष्कामो योऽर्चयेद्धरिम्।
दीक्षां प्राप्य विधानेन गुरोर्विगतकल्मषात्।।29।।
आचारनियताद् गृहस्थाद् विजितेन्द्रियात्।
तदनुज्ञानमात्रेण पुरश्चर्या यथाविधिः।।30।।
स सर्वान् पुण्यपापौघान् जित्वा निर्मलमानसः।
पुनरावृत्तिरहितं शाश्वतं पदमवाप्नुयात्।।31।।

जो अपने आचार में दृढ़ , जितेन्द्रिय, निष्पाप गृहस्थ गुरु से दीक्षा प्राप्त कर उनकी आज्ञा से सांसारिक विषयों की कामना न करते हुए हरि की अर्चना करते हैं और विधि के अनुसार पुरश्चरण करते हैं, वे सभी पुण्यों और पापों के समूह को जीतकर निर्मल मन से पुनर्जन्म से रहित शाश्वत स्थान को प्राप्त करते हैं।

1. घ. जृम्भणास्त्राणां।

**सकामो वाञ्छितान् लब्ध्वा भुक्तभोगान् मनोहरान्।**

**जातिस्मरश्चिरं भूत्वा याति विष्णोः परं पदम्।।32।।**

किन्तु सकाम साधक इस संसार में सभी सुन्दर भोगों को प्राप्त कर अपने जन्म को स्मरण करते हुए विष्णु के परम स्थान को प्राप्त करते हैं।

**यथा श्रीराममन्त्राणां प्रयोक्तुः पापसम्भवः।**

**तथा न लक्ष्मणमनोः किन्तु यान्ति परां गतिम्।।33।।**

जिस प्रकार सांसारिक कामना के लिए श्रीराम के मन्त्र का प्रयोग करनेवाले को पाप की सम्भावना हो सकती है, उस प्रकार लक्ष्मण के मन्त्र में पाप की सम्भावना नहीं है, किन्तु वे परम गति को प्राप्त करते हैं।

**मन्त्रोऽयं ब्रह्मणा पूर्वं तुष्टेन तपसा चिरम्।**

**सूर्यग्रहे कुरुक्षेत्रे मह्यं दत्तो हि सादरम्।।34।।**

प्राचीन समय में ब्रह्मा ने मेरी तपस्या से सन्तुष्ट होकर कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय यह मन्त्र मुझे दिया था।

**मयाप्युपासितोऽयं वै भक्तियुक्तेन चेतसा।**

**गुरुभक्तिं समालोक्य मामेवास्याकरोदृषिम्।।35।।**

**प्रकाशितो मयाप्यस्मिंल्लोके गुर्वाज्ञया पुनः।**

मैंने भी भक्तियुक्त मन से इस मन्त्र की उपासना की। तब मेरी गुरु भक्ति से सन्तुष्ट होकर उन्होंने इस मन्त्र का ऋषि मुझे ही बना दिया। फिर मैंने गुरु की आज्ञा से इसे लोक में प्रकाशित किया।

**उपास्य बहवो लोके मनुमेतदनेकशः।।36।।**

**संप्राप्य वाञ्छितानर्थानगमद्धाम वैष्णवम्।**

**अनेन सदृशो मन्त्रो मया दृष्टो न कुत्रचित्।।37।।**

इस मन्त्र की उपासना कर अनेक लोग इच्छित सांसारिक कामनाओं को प्राप्त कर विष्णु के परम धाम को प्राप्त कर चुके हैं। इसके समान मन्त्र मैंने दूसरा कही नहीं देखा।

**शैववैष्णवसौरेषु गाणत्येषु वा मुने।**

**केचिन्मुक्त्यर्थमेव स्युः केचिदैहिकसाधनाः।।38।।**

**भुक्तिमुक्तिकरश्चायमेको विजयते परम्।।39।।**

शैव, वैष्णव, सौर और गाणपत्य मन्त्रों में से कुछ केवल मुक्ति देनेवाले हैं तथा कुछ केवल सांसारिक कामनाओं के साधक हैं, किन्तु यह मन्त्र भोग और मोक्ष दोनों प्रदान करनेवाला है, अतः यह परम जयशील श्रेष्ठ है।

**इत्यस्त्यसंहितायां परमरहस्ये लक्ष्मणादिमन्त्रकथनं नाम एकत्रिंशोऽध्यायः।।31।।**

## द्वात्रिंशोऽध्यायः

### सुतीक्ष्ण उवाच

**सर्ववेदार्थतत्त्वज्ञो ननु निश्चलमानसः।**
**सम्यक् संशिक्षितश्चाहं बहुनापि कृपानिधे।।1।।**
**त्वया कारुण्यनिधिना पूर्वमज्ञास्तथा जहुः।**
**त्वत्प्रसादेन संजातं ज्ञानं विगतकल्मषम्।।2।।**

हे करुणा के सागर! मुनि अगस्त्य! प्राचीन काल में आपकी सहायता से लोगों ने अपने अज्ञान को त्याग दिया था, वह निष्कलुष ज्ञान आपकी कृपा से आज प्रकट हुआ।

**रामात्मनि परं ब्रह्मण्यासक्तमनसं च माम्।**
**लक्ष्मणे हि तथा रामे किञ्चिद् भेदोऽस्ति नैव हि।।3।।**

श्रीराम के स्वरूप परम ब्रह्म मैं आसक्त हूँ, किन्तु अब ज्ञात हुआ कि लक्ष्मण और श्रीराम में किंचिद् भेद नहीं है।

**हनुमन्मन्त्र इत्युक्तस्त्वया वै मुनिपुङ्गव।**
**तस्यानुष्ठानमेवाहं ज्ञातुमिच्छामि तत्प्रभो।।4।।**
**त्वयि प्रसन्ने सकलमाचक्ष्वाशु दयानिधे।**

आपने हनुमान् का जो मन्त्र कहा, उसकी अनुष्ठान-विधि मैं जानना चाहता हूँ। जब आप प्रसन्न हों, तब मुझे यह सबकुछ बतलायें।

### अगस्त्य उवाच

**स्मारितः सम्यगेवाहं त्वया श्रद्धावता मुने।।5।।**
**आञ्जनेयमनुर्ल्लोके भुक्तिमुक्त्यैकसाधनम्।**

प्रकाशितं शङ्करेण लोकानां हितमिच्छता।।6।।
भूतप्रेतपिशाचादिडाकिनीयक्षराक्षसाः ।
दृष्ट्वा च प्रपलायन्ते मन्त्रानुष्ठानतत्परम्।।7।।

अगस्त्य बोले- हे मुनि सुतीक्ष्ण! आप तो श्रद्धा से भरे हुए हैं। आपने ठीक ही याद दिलाया कि हनुमान् का मन्त्र इस संसार में भोग और मोक्ष दोनों का अचूक साधन है।संसार का भला चाहनेवाले भगवान् शंकर के द्वारा यह मन्त्र प्रकट किया गया है। मन्त्र के अनुष्ठान में लगे साधक को देखते ही भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, यक्ष और राक्षस सब भाग जाते हैं।

ऋषिरीश्वर एव स्यादनुष्टुप् छन्द उच्यते।
हनुमान् देवता प्रोक्तो हं बीजं शक्तिरंतजौ।।8।।
कीलकं हात्रयं प्रोक्तं वेधकं तु हसौ पुनः।
हनुमत्प्रीणनं चैव फलमाद्यमुदीरितम्।।9।।
सर्वेप्सितानां दातृत्वमस्यैवास्ति न चान्यतः।

इस मन्त्र के ऋषि स्वयं ईश्वर शिव हैं, छन्द अनुष्टुप् है, हनुमान् देवता कहे गये हैं, 'हं' यह बीज है और अन्त के दो बीजवर्ण शक्ति हैं। तीन बार 'हा' का उच्चारण कीलक है 'हसौ' वेधक है। हनुमान् की प्रीति इस मन्त्र का मुख्य फल है। सभी कामनाओं की पूर्ति की शक्ति इसी मन्त्र में है, दूसरे मन्त्र से नहीं होती है।

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य नमो भगवते पदम्।
ङेन्तं प्रकटसंयुक्तं पराक्रमपदं ततः।।10।।
तदाक्रान्तपदोपेतं दिङ्मण्डलमुदीरयेत्।
यशोवितानधवलीकृतजगत्त्रितयाय च।।11।।
वज्रदेहेति चोक्त्वा हं रुद्रावतारपदं तथा।
संबुद्ध्यन्तं पदं लङ्कापुरी दहनमीरयेत्।।12।।
उदधिर्ल्लङ्घनं चापि दशग्रीवकृतान्तकः।
सीताश्वासनेतिपदमञ्जनीगर्भसम्भव ।।13।।
श्रीरामलक्ष्मणानन्दकारिन् कपिसैन्यप्राकारक।
सुग्रीवसन्नद्धपदं पर्वतोत्पाटनं तथा।।14।।
बालब्रह्मचारिन्निति गम्भीरशब्दपदं तथा।
सर्वग्रहविनाशनसर्वज्वरहरं तथा।।15।।

डाकिनीविध्वंसनपदं ततस्तारमुदीरयेत्।
भयहात्रयमुच्चार्य हसावेहि वदत्ततः।।16।।
सर्वविषं हर परबलं क्षोभय द्विरुच्चरेत्।
सर्वकार्याणि साधयेति तथैवात्र द्विरुच्चरेत्।।17।।
हुं फट् स्वाहेति मन्त्रोऽयं मालाख्यः सर्वकामधृक्।

पहले प्रणव (ॐ) का उच्चारण कर 'नमो भगवते' यह पद जोड़ें। चतुर्थ्यन्त 'प्रकट' सहित 'पराक्रम' (प्रकटपराक्रमाय) पद जोड़े। तब 'आक्रान्त' पद के साथ 'दिङ्मण्डल' यह पद भी जोड़े। तब 'यशोवितानधवलीकृतजगत्त्रितयाय' यह कहें। 'वज्रदेह' ऐसा कहकर 'हं' और 'रुद्रावतार' भी चतुर्थ्यन्त पद के रूप में कहें। इसके बाद सम्बोधनान्त पद 'लंकापुरीदहन' का उच्चारण करें। तब 'उदधिर्ल्लङ्घन', दशग्रीवकृतान्तक! सीताश्वासन! अञ्जनीगर्भसम्भव! श्रीरामलक्ष्मणानन्दकारिन्! कपिसैन्यप्राकारक! 'सुग्रीवसन्नद्ध', 'पर्वतोत्पाटन', 'बालब्रह्मचारिन्', 'गम्भीरशब्द' 'सर्वग्रहविनाशन', 'सर्वज्वरहर' एवं 'डाकिनीविध्वंसन' पद बोलकर तार (ॐ) का उच्चारण करें। इसके बाद तीन बार 'भयहा' बोलकर 'हसौ' बोलें। तब 'सर्वविषं हर' 'परबलं' कहकर 'क्षोभय' यह दो बार कहें। सर्वकार्याणि के बाद 'साधय' भी दो बार बोलें। इसके बाद 'हुं फट् स्वाहा' यह बोलें।

**ॐ नमो भगवते प्रकटपराक्रमाय आक्रान्तदिङ्मण्डलाय यशोवितान-धवलीकृतजगत्त्रितयाय वज्रदेहाय हं रुद्रावताराय लङ्कापुरीदहन! उदधिर्ल्लङ्घन! दशग्रीवकृतान्तक! सीताश्वासन! अञ्जनीगर्भसम्भव! श्रीरामलक्ष्मणानन्दकारिन्! कपिसैन्यप्राकारक! सुग्रीवसन्नद्ध! पर्वतोत्पाटन! बालब्रह्मचारिन्! गम्भीरशब्द! सर्वग्रहविनाशन! सर्वज्वरहर! डाकिनीविध्वंसन! ॐ भयहा! भयहा! भयहा! हसौ एहि सर्वविषं हर परबलं क्षोभय क्षोभय सर्वकार्याणि साधय साधय हुं फट् स्वाहा।** यह मन्त्र सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाला है।

ॐ नमो भगवते चाञ्जनेयायेत्यङ्गुष्ठाभ्यामुदीरितः।।18।।
रुद्रमूर्त्तय इत्येवं तर्ज्जनीभ्यामनन्तरम्।
वायुसुतायापि तथा मध्यमाभ्यामपि स्फुटम्।।19।।
अग्निगर्भाय च तथानामिकाभ्यां प्रविन्यसेत्।
रामदूताय च पुनः कनिष्ठिकाभ्यां विचक्षणः।।20।।

**ब्रह्मास्त्रनिवारणाय चास्त्रमन्त्रसमीरितः।**
**षडङ्गं च मुने कृत्वा ध्यायेदेवमनन्यधीः।।21।।**

अब करन्यास कहते हैं। 'ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय' इससे दोनों हाथों के अंगूठे में न्यास कहा गया है। 'रुद्रमूर्तये' इससे दोनों तर्जनी में न्यास करें। 'वायुसुताय' इसका दोनों मध्यमा में स्पष्ट रूप से न्यास करें। 'अग्निगर्भाय' इससे दोनों अनामिका में न्यास करें। तब 'रामदूताय' से दोनों कनिष्ठिका में न्यास करें। 'ब्रह्मास्त्रनिवारणाय' यह अस्त्रमन्त्र कहा गया है। इस प्रकार षडंगन्यास कर एकाग्र होकर भगवान् हनुमान् का ध्यान करें।

**ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय इत्यङ्गुष्ठाभ्याम्।**
**ॐ नमो भगवते रुद्रमूर्त्तये इति तर्ज्जनीभ्याम्।**
**ॐ नमो भगवते वायुसुताय इति मध्यमाभ्याम्।**
**ॐ नमो भगवते अग्निगर्भाय इत्यनामिकाभ्याम्**
**ॐ नमो भगवते रामदूताय इति कनिष्ठिकाभ्याम्**
**ॐ नमो भगवते ब्रह्मास्त्रनिवारणाय हुं अस्त्राय फट्।**

**स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम्।**
**कुण्डलद्वयसंशोभिमुखाम्भोजं मुहुर्मुहुः।।22।।**

स्फटिक के समान चमकते हुए, स्वर्ण के समान कान्तिवाले, दो भुजाओं वाले, अंजलि बाँधे हुए, दो कुण्डलों से शोभित मुखकमल वाले हनुमान् का ध्यान बार बार करता हूँ।

**अयुतं च पुरश्चर्या रामस्याग्रे शिवस्य वा।**
**पूजां तु वैष्णवे पीठे शैवे वा विदधीत वै।।23।**

हनुमान् का पुरश्चरण श्रीराम के आगे या शिव के आगे दस हजार मन्त्रों का होता है। पूजा वैष्णव या शैव पीठ पर करें।

**अवृत्तिभिर्विना[1] नित्यं नक्ताशी विजितेन्द्रियः।**
**क्षुद्ररोगनिवृत्त्यर्थमष्टोत्तरशतं जपेत्।।24।।**
**जप्त्वा त्रिदिनमेकान्ते तेभ्यो मुच्येत तत्क्षणात्।**

निराहार न रहकर प्रतिदिन केवल रात्रि में भोजन कर जितेन्द्रिय होकर छोटे छोटे रोगों से छुटकारा पाने के लिए एक सौ आठ बार जप करें। इस प्रकार एकान्त में तीन दिन जप करने से उन रोगों से तत्क्षण मुक्ति मिल जाती है।

**क्षुद्रभूतेऽपि शान्त्यर्थमष्टोत्तरशतं जपेत्।।25।।**
**दिनत्रयमथो जप्त्वा भूतानां मुच्यते भयात्।**

छोटे छोटे भूत-प्रेतों का प्रकोप होने पर शान्ति के लिए एक सौ आठ जप करें। तीन दिनों तक इस प्रकार जप कर भूतों-प्रेतों के भय से मुक्त हो जाता है।

**भूतप्रेतपिशाचादि शान्तयेष्टोत्तरं शतम्।।26।।**
**प्रजप्त्वैतद्भयान्मुक्तो भवेदेव न संशयः।**

भूत, प्रेत, पिशाच आदि की शान्ति के लिए एक सौ आठ जप कर उनके भय से मुक्त हो ही जाता है, इसमें सन्देह नहीं।

**महारोगादिशान्त्यर्थमष्टोत्तरसहस्रकम् ।।27।।**
**जप्त्वा तस्मात् प्रमुच्येत निश्चितं नियताशनः।**

महान् रोग आदि की शान्ति के लिए एक हजार आठ बार संयमित भोजन करते हुए जप कर उन रोगादि से निश्चित रूप से मुक्त हो जाता है।

**जयाभिकांक्षिणां राज्ञामस्मादन्यो न विद्यते।।28।।**
**ध्यायन् राक्षसहन्तारमयुतं नियतात्मना।**
**जपन्नियमवाँश्चैव जयेद् दुर्जयमप्यरीन्।।29।।**

युद्ध में जीतने की अभिलाषा रखनेवाले राजाओं के लिए इससे भिन्न कुछ भी नहीं है। चित्त एकाग्र कर राक्षसों का वध करनेवाले हनुमान् का ध्यान करते हुए विधिपूर्वक जप करनेवाले साधक दुर्जय शत्रुओं को भी जीत लेते हैं।

**सन्धानाय तु सुग्रीवं संतारं संस्मरन्नपि।**
**अयुतेनैव बलिना संधिमाप्नोत्यशंसयः।।30।।**

मैत्री के लिए विशालकाय सुग्रीव को भी हनुमान् के साथ स्मरण करते हुए दस हजार जप करने से बलवान् व्यक्ति के साथ मैत्री हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं।

**लंकाया दाहकं ध्यात्वा जपेदयुतमञ्जसा।**
**शत्रुराष्ट्रं दहेदेव दुग्धाब्धिमपि चानघ।।31।।**
**जयार्थी रिपुसंघानामस्मादन्यो न विद्यते।**

लंका को जलानेवाले हनुमान् का ध्यान कर दस हजार की संख्या के परिमाण में जप करने से शत्रु के राष्ट्र को तो जला ही देता है बल्कि क्षीर-समुद्र को भी जला डालता है। इस प्रकार विजय प्राप्ति की कामना रखनेवाले जप करें। इसके अतिरिक्त दूसरा साधन नहीं है।

---

1. ग. आवृतीभिर्विना।

यस्तु गेहे हनूमतं सर्वदेव प्रपूजयेत्।।32।।
अर्चत्येतेन मन्त्रेण तस्य लक्ष्मीरचंचला।
दीर्घमायुर्ल्लभेदेव सर्वतो विजयी भवेत्।।33।।
मायादिभूतसंक्षोभस्तस्य देशे न जायते।
नान्यत्साधनमस्त्येव मन्त्रात्तस्माद्धनूमतः।।34।।
चौराधिव्याधिभूतानामयमेव परायणम्।
परापहृतराज्यानां[1] घर्षितानां परैः पुनः।।35।।
सन्नाहभाजां युद्धेषु बद्धानां परसैनिकैः।
शत्रवः सर्वदा मित्रभावेनैवासते सदा।।36।।

जो अपने घर में इस मन्त्र से प्रतिदिन हनुमान् की पूजा करते हैं उसके घर लक्ष्मी स्थिर होकर रहती है। वह दीर्घायु तो होता ही है, सभी जगत उसकी जीत होती है। माया आदि तथा भूतों का प्रकोप और कफ, पित्त और वायु का दोष नहीं होता। हनुमान् के उस मन्त्र को छोड़कर उनके लिए दूसरा साधन है ही नहीं। चोर, मानसिक सन्ताप, व्याधि और भूतों का भी यहीं पलायन है। दूसरे ने जिनका राज्य छीन लिया हो या दूसरे ने कुचल डाला हो या जो कवच पहनकर युद्धों में लड़ रहे हों या शत्रु के सैनिकों ने पकड़ लिया हो ऐसे संकट में पड़े लोगों के शत्रु हमेशा मित्र की भाँति व्यवहार करने लगते हैं।

शैवानां वैष्णवानां वै षट्कर्मात्र प्रदर्शितम्।।[2]

वैष्णवों एवं शैवों के लिए यहाँ केवल छह कर्म प्रदर्शित किए गये हैं।

यात्राकाले हनूमन्तं स्मरन् यस्तु स्वकाद् गृहात्।।37।।
निर्गच्छति स वेगेन इष्टार्थमपि गच्छति।

यात्रा के समय जो हनुमान् का स्मरण कर अपने घर से निकलते हैं, वे शीघ्र ही अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचते हैं।

स्वापकाले स्मरन्नित्यं चौरभूतादिकं जपेत्।।38।।
यद्वयं वासुदेवाय हनूमन्तपदन्ततः।
फलेति च फलि पदं धगेति धगितेति च।।39।।
आयुरा ख फ डा डे हि सद्यः प्रत्ययकारकः।
चतुर्विंशत्यक्षरकोऽमोघमन्त्रोऽयं प्लीहरोगनुत्।।40।।

1. ग. परापह्रतराज्यानां। 2. बंगाल की प्रति में इसी स्थल पर ग्रन्थ की समाप्ति हो जाती है।

**नागवल्लीदलं चैवमष्टप्रगुणितं शुभम्।**
**वंशजं सकलं स्थाप्य क्रमात् प्लीहोदरोपरि।।41।।**
**जप्त्वारण्योपलाग्नौ च दर्भमुष्टिं प्रजापयेत्।**
**मन्त्रेणानेनाभिमन्त्र्य सप्तवारं तथा पुनः।।42।।**
**तथाभिमन्त्रयेदेवं सप्तभिस्तु विचक्षणः।**
**स्फोटद्वारा भवेत् प्लीहो भस्मीभूतो न संशयः।।43।।**

सोते समय नित्य हनुमान् का ध्यान करते हुए चौरभूतादि मन्त्र का जप करें। 'वासुदेवाय हनूमते फल फलि धग धगि आयुराखफडाडे' इस चौबीस अक्षरों के इस मन्त्र के जप से प्लीहा से ग्रस्त उदर पर रखकर बाँस का पत्ता उसपर क्रम से रखकर जंगली पत्थर से उत्पन्न आग जलाकर एक मूँठ कुश को इस मन्त्र से सात बार गर्म करें और उससे पेट पर सात बार अभिमान्त्रित करें। इससे फोड़ा बनकर प्लीहा भस्म हो जाएगा। इसमें सन्देह नहीं।

**तारं हकारोऽग्निसमः षड्दीर्घस्वरविन्दुमान्।**
**प्रणवान्ततोऽष्टाक्षरको मूलमन्त्र उदाहृतः।।44।।**

तारक (ॐ) के बाद अग्नि समान हकार छह दीर्घ स्वरों के साथ बोलें अन्त में पुनः प्रणव (ॐ) बोलें। यह हनुमान् अष्टाक्षर मन्त्र है।

**ताराद्यं वज्रकायेति वज्रतुण्डेति ह्युद्धरेत्।**
**कपिलपिङ्गलप्रोक्ता ऊर्द्ध्वकेशं महाबलम्।।45।।**
**रक्तमुखतडिज्जिह्वा महारौद्रपदं ततः।**
**महादृढप्रहारश्च लंकेश्वरवधाय च।।46।।**
**महासेतुबन्धपदं महाशैलप्रवाह च।**
**गगने चर एह्येहि भगवंस्त्वं महापदम्।**
**बलपराक्रमपदं भैरवाज्ञां जयेति च।।47।।**
**एह्येहि महारौद्र दीर्घपुच्छेन वेष्टय।**
**वैरिणं भञ्जयपदं द्विरुक्तो हं फडन्तकः।।48।।**
**पंचविंशत्याद्यधिकः प्रोक्तो मन्त्रः शताक्षरः।**
**मालाख्योऽयं ज्वरादीनां रोगानामन्तकः स्मृतः।।49।।**

तार (ॐ) आदि में बोलकर 'वज्रकायं, 'वज्रतुण्ड' कहें। तब 'कपिलपिंगल' यह कहकर 'ऊर्ध्वकिश' और 'महाबल' कहें। 'रक्त मुखतडिज्जिह्वा' कहकर 'महारौद्र' पद कहें। तब 'महादृढप्रहार' और लंकेश्वरवधाय' कहें। इसके बाद 'महासेतुबन्ध' पद कहकर 'महाशैलप्रवाह' कहें। इसके बाद 'गगने चर', एहि एहि, भगवँस्त्वं और 'महा' कहें। तब 'बलपराक्रम' यह कहकर 'भैरवाज्ञां जय' ऐसा कहकर 'एहि एहि महारौद्र दीर्घपुच्छेन वेष्टय' और वैरिणं भञ्जय' यह शब्द बोलकर दो बार 'हं' कहकर 'फट्' शब्द से अन्त करें। इस प्रकार यह मन्त्र होगा- **ॐ वज्रकाय वज्रतुण्ड कपिलपिंगल ऊर्ध्वकिश महाबल रक्तमुखतडिज्जिह्वा महारौद्र महादृढप्रहार लंकेश्वरवधाय महासेतुबन्ध महाशैलप्रवाह गगने चर एहि एहि भगवँस्त्वं महाबलपराक्रम भैरवाज्ञां जय एहि एहि महारौद्र दीर्घपुच्छेन वेष्टय वैरिणं भञ्जय भञ्जय हं फट्**। पचीस पदों से अधिक का यह शताक्षर मन्त्र है, जो ज्वर आदि रोगों का नाश करनेवाला हनुमान् का मालामन्त्र है।

**आदौ षट्कोणमुद्धृत्य ततो वृत्तं लिखेन्मुने।**
**दलानि विलिखेदष्टौ ततः स्याच्चतुरस्त्रकम्।।50।।**
**सर्वलक्षणसंव्यक्तं साध्याख्याकर्मगर्भितम्।**
**तद्बीजं विलिखेद् भूयस्तत् क्रोडीकृतमान्मथम्।।51।।**
**ततस्तत् पंचबीजानि पुनरावर्तयेन्मुने।**
**पुनर्दशाक्षरेणैव तदेव परिवेष्टयेत्।।52।।**
**षडङ्गान्यग्निकोणादिकोणेष्वेव क्रमाल्लिखेत्।**
**तथा कोणकपोलेषु ह्रीं श्रीं द्वे विलिखेत्ततः।।53।।**
**हुं बीजं प्रतिकोणाग्रे केसराग्रेषु च स्वरान्।**
**मालामन्त्रस्य वर्णाः स्युश्चत्वारिंशच्च सप्त च।।54।।**
**वर्णाः सप्तदलेष्वेव षट्पञ्चाष्टमके दले।**
**पूर्वतो वेष्टयेत् काद्यैस्तत्सर्वं च तपोधन।।55।।**
**दिग्विदिक्षु लिखेद् बीजे नारसिंह वराहयोः।**
**क्रौं हुं चेति पूर्वादिभूगृहे चतुरस्त्रके।।56।।**
**यन्त्रेऽस्मिन् सम्यगाराध्य भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।**

सबसे पहले षट्कोण लिखें, तब उसके बाहर एक वृत्त लिखें। इसके बाद आठ दल लिखें। तब चतुर्भुज बनाबें। इस यन्त्र के मध्यभाग में सभी लक्षणों को स्पष्ट करते हुए साध्य का नाम बीच में लिखकर दोनों ओर क्रिया लिखें। तब उसका बीज बार कामबीज (क्लीं) के सम्पुटित कर लिखें। तब उन पाँच बीजाक्षरों को फिर दुहरावें। पुनः दशाक्षर मन्त्र से उसे वेष्टित करें। अग्निकोण से आरम्भ कर क्रम में लिखें। कोणों के दोनों कपोलों पर 'ह्रीं श्रीं' दो बार लिखें। प्रत्येक कोण के अग्रभाग में 'हुं' बीज लिखें और केसरों के अग्रभाग में सोलह स्वर लिखें। मालामन्त्र में सैंतालीस वर्ण हैं, जिनमें छह छह वर्ण सात दलों में और पाँच आठवें दल में लिखें। पूर्व दिशा से आरम्भ कर 'क' से ह तक व्यंजनों से सबको वेष्टित करें। दिशाओं और दिक्कोणों में नरसिंह (क्ष्रौं) और वराह के बीज (ह्रौं) लिखें। पूर्व दिशा से आरम्भ कर चतुर्भुज भू-पुर पर 'क्रौं हुं' यह लिखें। इस मन्त्र पर सम्यक् रूप से आराधना कर साधक भोग और मोक्ष प्राप्त करते हैं।

**एतद्यन्त्रं समालिख्य सौवर्णे राजते पटे।।57।।**
**भूर्जे वा सम्यगालिख्य गुलिकीकृत्य धारयेत्।।58।।**
**अपुत्रो लभते पुत्रान् अधनो धनमाप्नुयात्।**
**किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम्।।59।।**
**यन्त्रमेतत्समाख्यातं धारणात् पातकापहम्।**

इस यन्त्र को सोना, चाँदी, कपड़ा या भोजपत्र पर लिखकर गोली बनाकर धारण करें। इससे अपुत्र पुत्र प्राप्त करते हैं, निर्धन धन पाते हैं अधिक क्या कहना! यह मनुष्यों के लिए सभी सिद्धि प्रदान करनेवाला है। इसे धारण करने से पापों को नाश होता है। यह यन्त्र इस प्रकार कहा गया।

**षट्कोणादिमनोहरान्तं यन्त्रं लिखित्वा तस्य मध्ये साध्याख्या कर्मगर्भितं रामबीजं लिखेत्। तत्सर्वं मन्मथेन क्रोडीकृत्य अवशिष्टैर्मन्त्रार्णैर्मन्मथेन वेष्टयेत्।।60।। अष्टदलाद्बहिर्द्वारं दशाक्षरवेष्टनम्। इति वसिष्ठ कल्पभेदः। शेषं स्पष्टम्। षट्कोणादिरथ पूर्ववद् विलिखेत्। अथ तस्य मध्ये लिखेत्कर्मं षट्सुकोणेष्वपि क्रमात्।।61।।**

षट्कोण से सुन्दर भूपुर तक यन्त्र लिखकर उसके बीच में साध्य का नाम लिखना चाहिए और क्रिया से सम्पुटित कर रामबीज (रां) लिखें। सबको कामबीज से सम्पुटित कर मन्त्र के शेष वर्णों से और कामबीज से वेष्टित करें। अष्टदल के बाहर द्वार बनाकर दशाक्षर मन्त्र से वेष्ठित करें- यह वसिष्ठ कल्प में भिन्नता है। शेष स्पष्ट है। षट्कोणादि भी पूर्वोक्त विधि से लिखें। इसके बाद षट्कोण के मध्य में अभीष्ट कार्य लिखें और छह कोणों में भी क्रमशः लिखें।

**मूलमन्त्राक्षराण्येव सन्धिष्वङ्गं च मन्मथम्।**
**माया गण्डेषु किञ्जल्के स्वराणां लेखनं मतम्।।62।।**

रेखाओं की सन्धियों पर मूलमन्त्र और रेखाओं पर कामबीज (क्लीं) लिखें। कोण के कपोलों पर माया (ह्रीं) और केसरों पर सोलह स्वर लिखें।

**पत्रेषु पूर्ववन्मालामन्त्रो लेख्यः। क्रमेण हि दशाक्षरेण संवेष्ट्य काद्यानि व्यञ्जनानि च।।63।।**

पत्रों पर पूर्वोक्त रीति से मालामन्त्र लिखें। क्रमशः दशाक्षर मन्त्रों से वेष्ठित कर 'क' आदि व्यञ्जनों से वेष्टित करें।

**दिग्विदिक्षु लिखेद् बीजे नारसिंहवराहयोः।**
**एतद् यन्त्रवरं चात्र साङ्गावरणमर्चयेत्।।63।।**
**सौवर्णे राजते भूर्जे लिखित्वार्चनमाचरेत्।**
**फलं तु पूर्ववज्ज्ञेयं यन्त्रस्यास्य विचक्षणैः।।64।।**

दिशाओं और कोणों में नरसिंह (क्ष्रौं) और वराह का बीजमन्त्र(फट्) लिखें। यह यन्त्रराज है, इसका पूजन अंग और आवरण के साथ करें। सोना, चाँदी या भोजपत्र पर लिखकर इसका पूजन करें। इस यन्त्र की आराधना का फल विद्वान् वहीं जानें जो पूर्व में कहा गया है।

### अगस्त्य उवाच

**वक्ष्यामि रामचन्द्रस्य यन्त्रं कवचसंज्ञितम्।**
**धारणात् तस्य मर्त्यानां जायन्ते सर्वसिद्धयः।।65।।**
**नश्यन्ति सर्वपापानि विपदो यान्ति संक्षयम्।**
**भूतप्रेतपिशाचाद्याः पलायन्ते च दर्शनात्।।66।।**

मित्राणि स्थिरतां यान्ति शत्रवो यान्ति मित्रताम्।
ग्रहाः प्रसादमायान्ति दास्यं यान्ति महीभृतः।।67।।
किमत्र बहुनोक्तेन नास्त्यनेन सुदुर्ल्लभम्।
यन्त्रेण रामचन्द्रस्य वज्रपञ्जरसंज्ञितम्।।68।।

अब मैं श्रीराम का वह यन्त्र बतलाता हूँ, जिसे कवच कहा गया है। इस यन्त्र के धारण करने से मनुष्यों को सभी सिद्धियाँ मिल जाती हैं। सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, सारी विपत्तियाँ नष्ट हो जाती है। भूत, प्रेत पिशाच आदि देखने से ही भाग जाते हैं। उनकी मित्रता स्थिर होती है, शत्रु भी मित्र हो जाते हैं, ग्रह प्रसन्न होते हैं और राजागण उस व्यक्ति के दास बन जाते हैं। अधिक क्या कहना! श्रीरामचन्द्र के वज्रपंजर नामक यन्त्र के धारण करने से कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता।

कोष्ठैः सहैकविंशत्या पंक्तिद्वयविभूषितम्।
विन्यसेदुत्तमं चक्रमेतस्मिन् कवचं लिखेत्।।69।।

इक्कीस कोष्ठों के साथ दो पंक्तियों में सुसज्जित उत्तम चक्र लिखें और इसमें कवच लिखें।

द्वादशाक्षरवर्णानि गृहाद्यन्त्रेषु विन्यसेत्।
अनुलोमविलोमाभ्यां प्राग्दाक्षिण्यक्रमेण च।।70।।

भू-पुर से यन्त्र तक द्वादशाक्षर मन्त्र अनुलोम और प्रतिलोम की विधि से पूर्व-दक्षिण क्रम से लिखें।

राघवादीनि नामानि नमस्कारेण योजयेत्।
मे शिरः पात्विति च स्यात् सर्वतो वाक्ययोजना।।71।।

राघव आदि नाम नमस्कार के साथ लिखकर 'मे शिरः पातु' इत्यादि सभी स्थलों पर वाक्य योजना होगी।

साध्याख्यसंयुतां षष्ठ्यां स्वाहेत्येकादशे गृहे।
स्वकामशक्तिवाग्वर्म नारसिंहमतः परम्।।72।।
लक्ष्मीपाशाङ्कुशार्णानि वाराहं फट्स्वरूपके।
स्वाहेति रामभद्रस्य द्वादशाक्षरमीरितम्।।73।।

छठे कोष्ठ में साध्य का नाम लिखकर ग्यारहवें कोष्ठ में स्वाहा लिखें। तब स्वबीज (रं) , इसके बाद कामबीज (क्लीं), शक्ति( ह्रीं), वाग्बीज( ऐं), वर्म(हुं) तथा नरसिंह बीज (क्ष्रौं), लक्ष्मीबीज (श्रीं), पाश (आं), अंकुश (क्रौं) और वाराहबीज (फट्) लिखकर स्वाहा लिखे। यह श्रीराम का द्वादशाक्षर मन्त्र कहा गया है– रं क्लीं ह्रीं ऐं हुं क्ष्रौं श्रीं आं क्रौं फट् स्वाहा।

**सौवर्णे राजते पात्रे भूर्ज्जे वा सम्यगालिखेत्।**
**अथवा ताम्रपत्रे च गुलिकीकृत्य धारयेत्।।74।।**

सोना, चाँदी, भोजपत्र या ताँबा के पत्र भलीभाँति लिखें और गोली बना कर धारण करें।

**यावज्जीवं तु सौवर्णे रौप्ये विंशतिवर्षकम्।**
**भूर्जे द्वादशवर्षाणि तदर्द्धे ताम्रपत्रके।।75।।**

सोना पर लिखा हुआ जीवनपर्यन्त, चाँदी पर बीस वर्ष, भोजपत्र पर बारह वर्ष और ताँबा पर लिखा हुआ छह वर्ष तक यन्त्र प्रभावशाली रहता है।

**एवं लिख्य विशेषेण यन्त्रशक्तिं प्रतिष्ठिताम्[1]।**
**एतां [2]रामबलोपेतामित्यादिश्लोकषट्ककम्।।76।।**
**यन्त्राद् बहिःप्रदेशे तु वृत्ताकारं यथालिखेत्।**

---

1. क. यंत्रशक्तिंप्रतिष्ठिता।
2. ये छह श्लोक बुधकौशिक-प्रोक्त रामरक्षास्तोत्र में इस प्रकार उपलब्ध होते हैं– एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्। स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्।।10।। पाताल-भूतल-व्योमचारिणश्छद्मचारिणः। न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः।।11।। रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्। नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।।12।। जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्। यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः।।13।। वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्। अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम्।।14।। आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः। तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः।।15।। (रामरक्षास्तोत्र श्लोक सं.10-15)

इस प्रकार विशेष रूप से लिखकर यन्त्रशक्ति के रूप में 'एतां रामबलोपेतां' आदि छह श्लोक लिखकर प्रतिष्ठित करें। यन्त्र के बाहर वृत्त बनावें।

**सर्वदुष्टोपशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् ।।77।।**
**आयुरारोग्यमैश्वर्यपुत्रपौत्रप्रवर्द्धनम् ।**
**सर्वान् कामानवाप्नोति विष्णुलोकं[1] च गच्छति।।78।।**

यह यन्त्र सभी दुष्टों को शान्त करता है, सभी उपद्रवों का नाश करता है, आयु आरोग्य, ऐश्वर्य, पुत्र, पौत्र आदि की वृद्धि करता है। इसे धारण करनेवाले सभी कामनाओं को प्राप्त करते हैं और विष्णुलोक भी जाते हैं।

**इत्यगस्त्यसंहितायां परमरहस्ये श्रीरामकवचोद्धारकथनं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः।[2]**

**समाप्तश्चायं ग्रन्थः**

1. क. विष्णुलोके। 2. क. हनुमन्मन्त्रयंत्रश्रीरामकवचोद्धारकथनं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः।

# परिशिष्ट 1

## हेमाद्रि-कृत 'चतुर्वर्गचिन्तामणि' में उद्धृत 'अगस्त्य-संहिता' (कमलाकर भट्ट-कृत 'निर्णय-सिन्धु' में उद्धृत)

उपोषणं जागरणं पितॄनुद्दिश्य तर्पणम्। A.S.-28.5[a-b]
तस्मिन् दिने तु कर्त्तव्यं ब्रह्मप्राप्तिमभीप्सुभिः।। A.S.-28.5[c-d]
सर्वेषामप्ययं धर्मो भुक्तिमुक्त्यैकसाधनः। A.S.- 26.11[a-b]
अशुचिर्वापि पापिष्ठः कृत्वेदं व्रतमुत्तमम्। A.S.-26.11[c-d]
पूज्यः स्यात् सर्वभूतानां यथा रामस्तथैव सः। A.S.-26.12[a-b]
यस्तु रामनवम्यान्तु भुङ्क्ते मोहाद् विमूढधीः। A.S.-26. 12[c-d]
कुम्भीपाकेषु घोरेषु पच्यते नात्र संशयः।। A.S.-26.13[a-b]
अकृत्वा रामनवमीव्रतं सर्वव्रतोत्तमम्। A.S.-26.15 [a-b]
व्रतान्यन्यानि कुरुते न तेषां फलभाग् भवेत्।। A.S. -26.12[c-d]
प्राप्ते श्रीरामनवमीदिने मर्त्यो विमूढधीः। A.S.-27.9[a-b]
उपोषणं न कुरुते कुम्भीपाकेषु पच्यते।। A.S.-27.9[c-d]
आचार्यं चैव सम्पूज्य वृणुयात्प्रार्थयेन्निशि। A.S. 26.25 [a-b]
श्रीरामप्रतिमादानं करिष्येऽहं द्विजोत्तम। A.S.-26.25[c-d]
भक्त्याचार्यो भव प्रीतः श्रीरामोऽसि त्वमेव च।। A.S.-26.25[e-f]
तथा-
स्वगृहे चोत्तरे देशे दानस्योज्ज्वलमण्डपम्।
शङ्खचक्रहनूमद्भिः प्राग्द्वारे समलंकृतम्।। A.S.-26.35[a-b]
गरुत्मच्छार्ङ्गबाणैश्च दक्षिणे समलंकृतम्। A.S.-26.35c-d
गदाखड्गाङ्गदैश्चैव पश्चिमे सुविभूषितम्।। A.S.26.36[a-b]
पद्मस्वस्तिकनीलैश्च कौबेरे समलंकृतम्। A.S- 26.36c-d

मध्ये हस्तचतुष्काढ्यं वेदिकायुक्तमायतम्।।A.S.26.37a-b
ततः संकल्पयेद्देवं राममेव स्मरन्मुने। A.S.-26.38a-b
अस्यां रामनवम्यां च रामाराधनतत्परः।। A.S.-26.39a-b
उपोष्याष्टसु यामेषु पूजयित्वा यथाविधि। A.S.-26.39c-d
इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां च प्रयत्नतः। A.S.-26.40a-b
श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते। A.S.-26.40c-d
प्रीतो रामो हरत्वाशु पापानि सुबहूनि मे।।A.S.-26.41a-b
अनेकजन्मसंसिद्धान्यभ्यस्तानि महान्ति च। A.S.-26.41c-d
ततः स्वर्णमयीं रामप्रतिमां पलमात्रतः।। A.S.-26.42a-b
निर्मितां द्विभुजां दिव्यां वामाङ्कस्थितजानकीम्। A.S.-26.42c-d
बिभ्रतीं दक्षिणकरे ज्ञानमुद्रां महामुने।।A.S.-26.43a-b
वामेनाधःकरेणारादेवीमालिङ्ग्य संस्थिताम्। A.S.-26.43c-d
सिंहासने राजतेऽत्र पलद्वयविनिर्मिते।।' A.S.-26.44a-b
तथा-
'अशक्तो यो महाभागः स तु वित्तानुसारतः। A.S.-27.2a-b
पलेनार्धतदर्धेन तदर्धार्धेन वा मुने।।A.S.-27.2c-d
सौवर्णं राजतं वापि कारयेद्रघुनन्दम्। A.S.-28.25c-d
पार्श्वे भरतशत्रुघ्नौ धृतच्छत्रकरावुभौ।। A.S.-28.26a-b
चापद्वयसमायुक्तं लक्ष्मणं चापि कारयेत्। A.S.-28.26c-d
दक्षिणाङ्गे दशरथं पुत्रावेक्षणतत्परम्।।
मातुरङ्कगतं राममिन्द्रनीलसमप्रभम्। A.S.-28.27a-b
पञ्चामृतस्नानपूर्वे संपूज्य विधिवत्ततः।।
कौसल्यामन्त्रस्तु-
'रामस्य जननी चासि रामरूपमिदं जगत्।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि लोकमातर्नमोऽस्तु ते।।
नमो दशरथायेति पूजयेत् पितरं ततः।।'
अत्र दशावरणपञ्चावरणादिपूजाऽन्यत्र ज्ञेया।
'अशोककुसुमैर्युक्तमर्घ्यं दद्याद्विचक्षणः।
दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च।।A.S.-28.36a-b
राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। A.S.-28.36c-d
परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः।।A.S.-28.37a-b

गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ। A.S.-28.37[c-d]

पुष्पाञ्जलिं पुनर्दत्त्वा यामे यामे प्रपूजयेत्।।

दिवैवं विधिवत्कृत्वा रात्रौ जागरणं ततः।

ततः प्रातः समुत्थाय स्नानसन्ध्यादिकाः क्रियाः।। A.S.-26.51[a-b]

समाप्य विधिवद्रामं पूजयेद्विधिवन्मुने। A.S.-26.51[c-d]

ततो होमं प्रकुर्वीत मूलमन्त्रेण मन्त्रवित्।। A.S.-26.52[a-b]

पूर्वोक्तपद्मकुण्डे वा स्थण्डिले वा समाहितः। A.S.-26.52[c-d]

लौकिकाग्नौ विधानेन शतमष्टोत्तरं ततः।। A.S.-26.53[a-b]

साज्येन पायसेनैव स्मरन् राममनन्यधीः। A.S.-26.53[c-d]

ततो भक्त्या सुसंतोष्य आचार्यं पूजयेन्मुने।। A.S.-26.54[a-b]

ततो रामं स्मरन् दद्यादेवं मन्त्रमुदीरयेत्। A.S.-26.55[c-d]

"इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलंकृताम्।। A.S.-26.56[a-b]

चित्रवस्त्रयुगच्छन्नां रामोऽहं राघवाय ते। A.S.-26.56[c-d]

श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु राघवः।।" A.S.-26.57[a-b]

इति दत्त्वा विधानेन दद्याद्वै दक्षिणां भुवम्। A.S.-26.58[c-d]

ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।।' A.S.-26.60[c-d]

इति।

# परिशिष्ट 2

## 'रामतापिनीयोपनिषद्' में उद्धृत रामोपासना की फलश्रुति

गाणपत्येषु शैवेषु शाक्तसौरेष्वभीष्टदः। A.S.-19.1c-d
वैष्णवेष्वपि सर्वेषु राममन्त्रः फलाधिकः।।4।।A.S.-19.2a-b
गाणपत्यादिमन्त्रेषु कोटिकोटिगुणाधिकः। A.S.-19.2c-d
मन्त्रस्तेष्वप्यनायासफलदोऽयं षडक्षरः।।5।। A.S.-19.3a-b
षडक्षरोऽयं मन्त्रः स्यात् सर्वाघौघनिवारणः।A.S.-19.3c-d
मन्त्रराज इति प्रोक्तः सर्वेषामुत्तमोत्तमः।।6।। A.S.-19.4a-b
कृतं दिने यद्दुरितं पक्षमासर्तुवर्षजम्। A.S.-19.4c-d
सर्व दहति निःशेषं तूलराशिमिवानलः।।7।। A.S.-19.5a-b
ब्रह्महत्यासहस्राणि ज्ञानाज्ञानकृतानि च।A.S.-19.5a-b
स्वर्णस्तेयसुरापानगुरुल्पायुतानि च।।8।। A.S.-19.6c-d
कोटिकोटिसहस्राणि उपपातकजान्यपि।A.S.-19.7a-b
सर्वाण्यपि प्रणश्यन्ति राममन्त्रानुकीर्तनात्।।9।। A.S.-19.7c-d
भूतप्रेतपिशाचाद्याः कूष्माण्डब्रह्मराक्षसाः। A.S.-19.8a-b
दूरादेव प्रधावन्ति राममन्त्रप्रभावतः।।10।।A.S.-19.8c-d
ऐहलौकिकमैश्वर्यं स्वर्गाद्यं पारलौकिकम्।
कैवल्यं भगवत्त्वं च मन्त्रोऽयं साधयिष्यति।।11।।
ग्राम्यारण्यपशुघ्नत्वं संचितं दुरितं च यत्। A.S.-24.35c-d
मद्यपानेन यत्पापं तदप्याशु विनाशयेत्।।12।।A.S.-24.37a-b
अभक्ष्यभक्षणोत्पन्नं मिथ्याज्ञानसमुद्भवम्।A.S.-24.37c-d
सर्व विलीयते राममन्त्रस्यास्यैव कीर्तनात्।।13।। A.S.-24.38a-b
श्रोत्रियस्वर्णहरणाद्यच्च पापमुपस्थितम्। A.S.-24.38c-d
रत्नादेश्चापहारेण तदप्याशु विनाशयेत्।।14।। A.S.-24.39a-b
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं हत्वा च किल्विषम्।

संचिनोति नरो मोहाद्यद्यत्तदपि नाशयेत्। ।15। ।
गत्वापि मातरं मोहादगम्यश्चैव योषितः। A.S.-24.39$^{c-d}$
उपास्यानेन मन्त्रेण रामस्तदपि नाशयेत्। ।16। ।A.S.-24.40$^{a-b}$
महापातकपापिष्ठसङ्गत्या संचितं च यत्।A.S.-24.40$^{c-d}$
नाशयेत्तत्कथालापशयनासनभोजनैः। ।17। । A.S.-24.41$^{a-b}$
पितृमातृवधोत्पन्नं बुद्धिपूर्वमघं च यत्। A.S.-24.41$^{c-d}$
तदनुष्ठानमात्रेण सर्वमेतद्विलीयते। ।18। । A.S.-24.44$^{a-b}$
यत्प्रयागादितीर्थोक्तप्रायश्चित्तशतैरपि।A.S.-24.45$^{c-d}$
नैवापनोद्यते पापं तदप्याशु विनाशयेत्। ।19। । A.S.-24.46$^{a-b}$
पुण्यक्षेत्रेषु सर्वेषु कुरुक्षेत्रादिषु स्वयम्।A.S.-24.46$^{c-d}$
बुद्धिपूर्वमघं कृत्वा तदप्याशु विनाशयेत्। ।20। ।A.S.-24.47$^{a-b}$
कृच्छैस्तप्तपराकाद्यैर्नानाचान्द्रायणैरपि।
पापं च नापनोद्यं यत्तदप्याशु विनाशयेत्। ।21। ।
आत्मतुल्यसुवर्णादिदानैर्बहुविधैरपि। A.S.-24.47$^{c-d}$
किंचिदप्यपरिक्षीणं तदप्याशु विनाशयेत्। ।22। । A.S.-24.48$^{a-b}$
अवस्थात्रितयेष्वेव बुद्धिपूर्वमघं च यत्।
तन्मन्त्रस्मरणेनैव निःशेषं प्रविलीयते। ।23। ।
अवस्थात्रितयेष्वेवं मूलबन्धमन्त्रं च यत्।
तत्तन्मन्त्रोपदेशेन सर्वमेतत्प्रणश्यति। ।24। ।
आब्रह्मबीजदोषाश्च नियमातिक्रमोद्भवाः। A.S.-21.10$^{a-b}$
स्त्रीणां च पुरुषाणां च मन्त्रेणानेन नाशितः। ।25। ।A.S.-21.10$^{c-d}$
येषु येष्वपि देशेषु रामभद्र उपास्यते। A.S.-21.11$^{c-d}$
दुर्भिक्षादिभयं तेषु न भवेत्तु कदाचन। ।26। ।A.S.-21.12$^{a-b}$
शान्तः प्रसन्नवदनो ह्यक्रोधो भक्तवत्सलः। A.S.-21.12$^{c-d}$
अनेन सदृशो मन्त्रो जगत्स्वपि न विद्यते। ।27। ।A.S.-21.13$^{a-b}$
सम्यगाराधितो रामः प्रसीदत्येव सत्वरम्। A.S.-21.13$^{c-d}$
ददात्यायुष्यमैश्वर्यमन्ते विष्णुपदं च यत्। ।28। ।A.S.-21.14$^{a-b}$

# परिशिष्ट 3

## 'अगस्त्य-संहिता' से उद्धृत रामनवमी-व्रत-कथा

### पाण्डुलिपि 'अ' में लिखित रामनवमीपूजा विधि

**अथ रामनवमीपूजाविधिः। सुवर्णप्रतिमां कारयित्वा मृण्मयीं वा प्रातः कृतनित्यक्रियः आचम्य पूर्व्ववत् ताम्रपात्रमादाय उदङ्मुख उत्तिष्ठन्** ॐ भगवन् सूर्य्य भगवत्यो देवता यूयमत्र साक्षिण्योऽद्यादिप्रतिवत्सरं चैत्रशुक्लनवम्यां श्रीरामनवमीव्रतमहमाचरिष्यामीति **निवेद्य कुशत्रय-तिल-जलान्यादाय सङ्कल्पङ्कुर्यात्।** ॐ कुलकोटिसमुद्धरणपूर्व्वक-विष्णुलोकमहितत्त्व-कामनया अद्यादि-प्रतिवत्सरं चैत्रशुक्लनवम्यां भगवन्तं ससीतलक्ष्मणराममहं पूजयिष्ये।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ। ।ॐ ससीतरामलक्ष्मण इह सुप्रतिष्ठितो भव। **इति प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।**

**ततो दूर्वादलश्यामं पद्मपत्राक्षं पीतवाससम् द्विभुजं धनुर्द्धरं कवचिनं ध्यात्वा** रां रामाय नम **इति स्नपनं** ॐ भूर्भुवःस्वर्भगवन् राम इहागच्छ इह तिष्ठेत्या**वाह्य स्नापयित्वा**

ॐ सीतापते नमस्तुभ्यं रावणस्यान्तकारक।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कौशल्यानन्दवर्द्धन।।
एषोर्घ्यः रां रामाय नमः। इदमनुलेपनं 3। एते तिलाः। एते यवाः रां रामाय नमः। **पुष्पाण्यादाय**

सीतापते नमस्तुभ्यं रावणस्यान्तकारक।
गृहाण कुसुमं देव कौशल्यानन्दवर्द्धन।।
एतानि पुष्पाणि रां रामाय नमः।

इमे यज्ञोपवीते बृहस्पतिदैवते रां (रामाय नमः।) इदं वस्त्रं बृहस्पति दैवतं रां (रामाय नमः।)

एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलनैवेद्यानि रां रामाय नमः।

ॐ सीते इहागच्छ इह तिष्ठ। **तत्रार्घदानमन्त्रः—**

ॐ सीते देवि नमस्तुभ्यं रामचन्द्रप्रिये सदा।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वरदा भव शोभने।।

एषोऽर्घ्यः ॐ सीतायै नमः। **एवं पञ्चोपचारैः पूजयेत्।**

**तथैव कौशल्यां पूजयेत्।** कौशल्ये इहागच्छ इह तिष्ठ। **अर्घ्यदानमन्त्रः—**

ॐ कौशल्ये प्रणमामि त्वां राममातः सुशोभने।
अदिते त्वं गृहाणार्घ्यं वरदा भव सर्वदा।।

एषोऽर्घ्यः ॐ कौशल्यायै नमः। **एवं पञ्चोपचारैः पूजयेत्।**

**ततः** ॐ कैकेयि इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ कैकेयि प्रणमामि त्वां रावणस्यान्तकारिणि।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वरदा भव शोभने।।

एषोऽर्घ्यः ॐ कैकेय्यै नमः। **एवं चन्दनादिना पूजयेत्।**

**ततः सुमित्रापूजा।**

ॐ सुमित्रे इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ सुमित्रे त्वां नमस्यामि शेषमातर्नमोऽस्तु ते।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वरदा भव सुन्दरि।।

एषोऽर्घ्यः ॐ सुमित्रायै नमः। **एवं चन्दनादिना पूजयेत्।**

ॐ दशरथ इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ अजपुत्र महाबाहो श्रीमद्दशरथ प्रभो।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रामतात नमोऽस्तु ते।।

एषोऽर्घ्यः ॐ दशरथाय नमः। **एवं पूजयेत्।**

ॐ भरत इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ दाशरथे त्वां नमस्यामि रामभक्त नृपात्मज।
मया समर्पितं तुभ्यमर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

एषोऽर्घ्यः ॐ भरताय नमः।

ॐ लक्ष्मण इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ लक्ष्मणत्वं महाबाहो इन्द्रजिद्वधकारक।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सुमित्रातनय प्रभो।।

एषोऽर्घ्यः ॐ लक्ष्मणाय नमः। **एवं पूजयेत्।**

ॐ शत्रुघ्न इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ शत्रुघ्न प्रणमामि त्वां लवणस्यान्तक प्रभो।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रामभक्तं प्रयच्छ मे।।

एषोऽर्घ्यः ॐ शत्रुघ्नाय नमः।

**एताय्यँथोक्तविधिना पञ्चोपचारैः पूजयेत्। ततः प्रत्येकमपरे पूजनीयाः।**

ॐ सुग्रीव इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ सुग्रीवाय नमस्तुभ्यं दशग्रीवान्तकप्रिय।
गृहाणार्घ्यं महावीर किष्किन्धानायक प्रभो।।

एषोर्घ्यः ॐ सुग्रीवाय नमः। एवं पूजयेत्।

ॐ हनुमन् इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ कूर्मकुम्भीरसंकीर्णस्वात्तीर्णोऽसि महार्णवम्।
हनूमते नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्य महामते।।

एषोर्घ्यः ॐ हनूमते नमः। **एवं पूजयेत्।**

**विभीषण अंगद धृष्टि जय विजय जयन्त सुराष्ट्र राष्ट्र अशेष नल नील द्वारपाल सुमन्त एते सचिवाः पूज्याः। ततो वज्र दण्ड पाश खड्ग शूल अम्बुज चक्र शङ्ख गदा शार्ङ्ग बाण वसिष्ठ वामदेव जाबालि गौतम विष्वक्सेनप्रभृतयः पूजनीयाः। एवम्।**

**पाण्डुलिपि 'आ' में लिखित रामनवमीपूजा विधि**

(1) राम
(2) सीता
(3) लक्ष्मण
(4) दशरथ
(5) कौशल्या
(6) कैकेयी
(7) सुमित्रा
(8) भरत
(9) शत्रुघ्न
(10) सुग्रीव
(11) हनुमान्
(12) जाम्बवान्
(13) विभीषण
(14) अंगद
(15) नल
(16) नील
(17) धृष्ट
(18) जय
(19) विजय
(20) सुराष्ट्र
(21) राष्ट्र
(22) कोपन
(23) अकोपन
(24) सुमन्त्र
(25) इन्द्रादिदशदिक्पाल
(26) अनन्त
(27) ब्रह्मा

**ततोऽत्र पूजयेत् पुष्पाक्षतैः** ॐ वज्राय नमः, ॐ शक्त्यै नमः, ॐ दण्डाय नमः, ॐ शङ्खाय नमः, ॐ पाशाय नमः, ॐ गदाय नमः, ॐ शूलाय नमः, ॐ चक्राय नमः, ॐ पद्माय नमः, ॐ अङ्कुशाय नमः। ततः सूर्यादिनवग्रहाः इति।

**अथ घृतदीपम्।**

नमोऽस्यां रात्रौ चैत्रशुक्लरामनवम्यां सकलपापविनिर्म्मुक्तिपूर्व्वक-ज्योतिष्मद् विमानकरणक-विष्णुलोकगमनकामनयामुं घृतदीपं श्रीरामचन्द्रायाहन्ददे।।

**प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः।** ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ।।। श्रीरामचन्द्र साङ्ग-सायुध-सवाहन-सपरिवार इह सुप्रतिष्ठितो भव। **इति**

**छन्दोगानां प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः** ॐ वाङ्मनः प्राणापानो व्यान चक्षुः श्रोत्रं शर्म्मवर्म्मभूतिः प्रतिष्ठा ॐ श्रीरामचन्द्र साङ्ग-सायुध-सवाहन-सपरिवार इह सुप्रतिष्ठितो भव।।

**पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वोपविश्य-**

नमो नमस्ते देवेश सुरासुरपते जय।
जय कामद भक्तानां जय दाशरथे प्रभो।।
जय सीतापते नाथ जय भग्नेशकार्मुक।
जब ब्रह्माण्डखण्डेश जय रावणमर्द्दन।।
जय बालिकपीशघ्न जय सुग्रीवराज्यद।
जय द्विजगणानन्द जय वायुसुतप्रिय।।
इति संकीर्त्य देवेशं प्रणिपत्य पुनः पुनः।
सर्वान् कामानवाप्नोति ततो मोक्षमवाप्नुयात्।।

एष पुष्पाञ्जलिः नमो भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः।।

।। श्रीरामचन्द्राय नमः।।

**अथ रामनवमीपूजाविधिः**

**मृण्मयीं प्रतिमां विधाय** ॐ रामोऽसीति **नाम कृत्वा** ॐ **मनोजूतिरित्यादिमन्त्रेण प्रतिष्ठां कृत्वा रामं ध्यायेत्-**

कोमलाङ्गं विशालाक्षमिन्द्रनीलसमप्रभम्।
दक्षिणांशे दशरथं पुत्रावेक्षणतत्परम्।।

पृष्ठतो लक्ष्मणन्देवं सच्छत्रं कनकप्रभम्।
पार्श्वे भरत शत्रुघ्नौ तालवृन्तकरावुभौ।।
अग्रेप्यग्रं हनूमन्तं रामानुग्रहकांक्षितम्।

**एवं ध्यात्वा प्रतिमां स्वशाखोक्तविधिना संस्थापयेत्।**

ॐ इन्द्राग्निर्यमश्चैव निर्ऋतोवरुणोऽनिलः।
कुबेर ईशो ब्रह्मा च दिक्पालाः स्नापयन्तु ते।।

**इत्यनेन स्नापयेत्।**

**ततो यवमादाय** ॐ ह्रौं श्रीं महावीर समरवीरपते श्रीरामचन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ **इत्यावाह्य स्थापयित्वा फल-पुष्पाम्बुसम्पूर्ण-चूताशोक-तुलसीदल-संयुक्तमुज्ज्वलं शङ्खं गृहीत्वा।**

दशग्रीवविनाशाय जातोऽसि रघुनन्दन।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसीद परमेश्वर।।

एषोऽर्घ्यः भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः।

सुगन्धिचन्दनं दिव्यं कर्प्पूरादिमिश्रितम्।
सीतया भार्य्यया सार्द्धं रक्षोघ्नं परिगृह्यताम्।।

इदमनुलेपनं भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः।

**पुष्पमादाय**

पुष्पन्तु परं दिव्यं पुण्यं सुरभिसंयुतम्।
गृहाण परया भक्त्या मया दत्तं जगत्पते।।

इदं पुष्पं भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः।

**ततो यज्ञोपवीतमादाय**

श्रीरामविबुधाधीश सुरासुरवरप्रद।
यज्ञोपवीतं मद्दत्तं परिधत्स्व रघुनन्दन।।

इमे यज्ञोपवीते बृहस्पतिदैवते भगवते श्री रामचन्द्राय नमः।

**ततो वासोयुगलमादाय**

ॐवासो युगं गृहाणेश तन्तुसन्तानकल्पितम्।
सीतया भार्य्यया सार्द्धं रक्षोघ्नं परिधीयताम्।।

इमे वासोयुगे बृहस्पतिदैवते भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः।

ॐरामचन्द्र सुरश्रेष्ठ जानक्या भ्रातृभिः सह।
पूजितोऽसि मया देव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

एष धूपः भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः।

ॐ मारीचघ्न महाबाहो सङ्ग्रामव्यसन प्रभो।
दीपोऽयं गृह्यतां देव त्रैलोक्यध्वान्तनाशन:।।
एष दीप: भगवते श्रीरामचन्द्राय नम:।
इदं ताम्बूलं भगवते श्रीरामचन्द्राय नम:।
नैवेधं फल पक्वान्नं शर्क्कराघृतपाचितम्।
गृहाण जगतां सर्व्वैर्बन्धुजनैस्सह।।
एतानि नैवेधानि ॐ भगवते श्रीरामचन्द्राय नम:।
ॐ नमस्ते पुण्डरीकाक्ष त्राहि मां भवसागरात्।
सर्वपापप्रणाशार्थं दण्डवत् प्रणमाम्यहम्।।

**इत्यनेन दण्डवत् प्रणामं कुर्य्यात्।**

ॐ यानि कानि कृतानीह पापानि मम जन्मनि।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

**अनेन मन्त्रेण प्रदक्षिणं कुर्य्यात्। ततः उपविश्य पठेत्।**

ॐ नमस्ते देव देवेश सुरासुरपते जय।
जय कामद भक्तानां जय दाशरथे प्रभो।।
जय सीतापते नाथ जय भग्नेशकार्मुक।
जय ब्रह्माण्ड खण्डेश जय रावणमर्द्दन।।
जय बालीकपीशघ्न जय सुग्रीवराज्यद।
जय द्विजगणानन्द जय वायुसुतप्रिय।।
इति संकीर्त्य देवेशं प्रणिपत्य पुन: पुन:।
सर्वान् कामानवाप्नोति ततो मोक्षमवाप्नुयात्।।
एष पुष्पाञ्जलि: नमो भगवते श्रीरामचन्द्राय नम:।

**ततः सीतापूजा।**

ॐ सीते इहागच्छ इह तिष्ठ **इत्यावाह्य**

ॐ दशाननविनाशाय जाता धरणिसंभवा।
मैथिली शीलसम्पन्ना पातु न: पतिदेवता।।

एषोऽर्घ्य: ॐ सीतायै नम:। इदमनुलेपनम्। इदं सिन्दूरम्। इदमक्षतम्। इदं पुष्पम्। एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-नैवेद्यानि ॐ सीतायै नम:।

**ततो** लक्ष्मण इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य

ॐ निहतो रावणिर्य्येन शक्रजिच्छत्रुघातिना।
स: पातु लक्ष्मणो धन्वी सुमित्रानन्दवर्द्धन।।
एषोऽर्घ्य: भगवते श्री लक्ष्मणाय नम:।

**ततोऽष्टदलमध्ये पूर्वदले** ॐ दशरथ इहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाह्य

ॐ नानाविधगुणागार गृहाणार्घ्यं नृपोत्तम।
रविवंशप्रदीपाय नमो दशरथाय वै।।

एषोऽर्घ्यः दशरथाय नमः।

**एवं गन्धादिना पूजयेत्। आग्नेयदले कौशल्यामावाहयेत्।**

ॐ कौशल्ये इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ गृहाणार्घ्यं मया देवि रम्ये दशरथप्रिये।
जगदानन्दवन्द्यायै कौशल्यायै नमो नमः।।

एषोऽर्घ्यः कौशल्यायै नमः। इदमनुलेपनम्। इदं सिन्दूरम्। इदमक्षतम्। **इत्यादिना पूजयेत्।**

**याम्यदले** कैकेयि इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ दृढ़प्रतिज्ञे कैकेयि मातर्भ्भरतवन्दिते।
गृहाणार्घ्यं महादेवि रक्ष मां भक्तवत्सले।।

एषोऽर्घ्यः कैकेय्यै नमः। इदमनुलेपनम्। इदं सिन्दूरम्। इदमक्षतम्। **इत्यादिना पूजयेत्।**

**नैर्ऋत्यदले** सुमित्रे इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ शुभलक्षणसम्पन्ने लक्ष्मणानन्दकारिणि।
सुमित्रं देहि मे देवि सुमित्र्यै वै नमो नमः।।

एषोऽर्घ्यः सुमित्रायै नमः। एवं गन्धादिना पूजयेत्।

**पश्चिमदले** भरत इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ भक्तवत्सल भक्त्यात्म रामभक्तिपरायण।
भक्त्या दत्तं गृहाणार्घ्यं भरताय नमो नमः।।

ॐ एषोऽर्घ्यः ॐ भरताय नमः। इदमनुलेपनेम्। एते तिलाः। इदं पुष्पम्। **एवं पूजयेत्।**

**ततः वायव्यदले** शत्रुघ्न इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ लवणान्तक शत्रुघ्न शत्रुकाननपावक।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसीद कुरु मे शुभम्।।

एषोऽर्घ्यः ॐ शत्रुघ्नाय नमः। **एवं गन्धादिना पूजयेत्।**

**उत्तरदले** सुग्रीव इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ सुग्रीवाय नमस्तुभ्यं दशग्रीवान्तकप्रिय।
गृहाणार्घ्यं महावीर किष्किन्धानायक प्रभो।।

एषोर्घ्यः ॐ सुग्रीवाय नमः।

**ईशानदले** ॐ हनुमन्निहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ कूर्मकुम्भीव संकीर्णमुत्तीर्णोऽसि महार्णवम्।
हनूमते नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्यं महामते।।

एषोर्घ्यः ॐ हनुमते नमः। **एवं चन्दनादिना पूजयेत्।**

ततो विभीषण इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ विभीषणाय नमः। **इति पूजयेत्।**

ॐ जाम्बवान् इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ जाम्बवते नमः **इति पूजयेत्।**

ॐ अंगद इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ अङ्गदाय नमः। **एवं पूजयेत्।**

ॐ नल इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ नलाय नमः। **एवं पूजयेत्।**

ॐ नील इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ नीलाय नमः। **एवं पूजयेत्।**

**ततोऽष्टदलमध्ये** धृष्टे इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः धृष्ट्यै नमः।

ॐ जय इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः जयाय नमः।

ॐ विजय इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ सुराष्ट्र इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ सुराष्ट्राय नमः।

ॐ राष्ट्रवर्द्धन इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः राष्ट्रवर्द्धनाय नमः।

ॐ अकोपन इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ अकोपनाय नमः।

ॐ धर्मपाल इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ धर्मपालाय नमः।

ॐ सुमन्तो इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोर्घ्यः ॐ सुमन्ताय नमः।

**दलाग्रे** ॐ लोकपाल इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोर्घ्यः लोकपालाय नमः। **एवं संपूजयेत्।**

ॐ इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ इन्द्राय नमः। एवं पूजयेत्।

ॐ अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ अग्नये नमः।

ॐ यम इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ यमाय नमः।

ॐ निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ निर्ऋतये नमः।

ॐ वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ वरुणाय नमः।

ॐ वायो इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ वायवे नमः।

ॐ कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ कुबेराय नमः।

ॐ ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ ईशानाय नमः।

**निर्ऋतिवरुणयोर्मध्येऽनन्तपूजा।** ॐ अनन्त इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ

अनन्ताय नमः।

**इन्द्रेशानयोर्म्मध्ये** ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ। एषोऽर्घ्यः ॐ ब्रह्मणे नमः।

**ततोऽस्त्राणि पूजयेत्।** ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ दण्डाय नमः ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ चक्राय नमः। ॐ पद्माय नमः। **पुष्पाक्षतैः पूजयेत्।**

ॐ सूर्यादिनवग्रहाः इहा गच्छत इह तिष्ठत। एषोऽर्घ्यः ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः। **इति गन्धादिभिः पूजयेत्। प्रभातसमये विसर्ज्जनम् कुर्यात्। तद्यथा-**

देवदेव महाबाहो दशग्रीवनिकृन्तन।
गृहीत्वा मत्कृतां पूजां स्वस्थानं गच्छ ते नमः।।
मम कृतां देव पूजां सौभाग्यसुखदान्तथा।
गृहीत्वा गच्छ स्वस्थानमपराधं क्षमस्व मे।।
न्यूनाधिकं च यत्किञ्चिन्नवम्यां च यत्कृतम्।
कृपां मयि विधायेत्थं क्षमस्व पुरुषोत्तम।।
रामचन्द्र सुराधीश वैकुण्ठं व्रज पार्थिव।
पूजां मदीयामादाय मम स्वस्तिकरो भव।।
ॐ रूपन्देहि यशो देहि भाग्यं भगवन् देहि मे।
धर्मान्देहि धनन्देहि सर्वान् कामान् प्रदेहि मे।।

**इति प्रणमेत्।**

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम्।
इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

श्रीरामचन्द्र पूजितोऽसि प्रसीद **इति विसर्ज्जयेत्।**

**ततो** लक्ष्मणादयो देवाः पूजिताः स्थः क्षमध्वमिति **तान् विसर्ज्जयेत्।**

ॐ अद्य कृतैतद्रामनवम्यां ससीतश्रीरामलक्ष्मणादिपूजनप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे।

**मृण्मयीञ्च महानद्यां विसर्ज्जयेत्। ततः स्नात्वा नित्यं च विधाय ब्राह्मणान् भोजयित्वा तेभ्यो दक्षिणान्दत्वा स्वयं भुञ्जीत इति पूजाविधिः।**

## अथ कथा

प्राप्ते श्रीरामनवमीदिने मर्त्यो विमूढधीः।
उपोषणं न कुरुते कुम्भीपाकेषु पच्यते[1]।।1।।
यत्किंचिद्राममुद्दिश्य नो ददाति स्वशक्तितः।
रौरवेषु स मूढात्मा[2] पच्यते[3] नात्र संशयः।।2।।
पीताम्बराणि[4] देवाय प्रार्थितान्यर्पयेत्सुधीः।
स्वर्णयज्ञोपवीतानि दद्याद्देवाय शक्तितः।।3।।
नानारत्नविचित्राणि दद्यादाभरणानि च।
हिमाम्बुघृष्टरुचिरघनसारसमन्वितम् ।।4।।
गन्धं दद्यात्प्रयत्नेन सागुरुं च सकुङ्कुमम्।
मूलमन्त्रेण सकलानुपचारान्प्रकल्पयेत्।।5।।
कह्लारकेतकीजातीपुन्नागाद्यैः प्रपूजयेत्।
चम्पकैः शतपत्रैश्च सुगन्धैः सुमनोहरैः।।6।।
घण्टां च वादयन्[5] धूपं दीपं चास्मै समर्पयेत्।
भक्ष्यभोज्यादिकं भक्त्या देवाय[6] विधिनार्पयेत्।।7।।
एवं सोपस्करं देवं [7]दत्वा पापैः प्रमुच्यते।
जन्मकोटिकृतैः घोरैर्नानारूपैः सुदारुणैः।।8।।
विमुक्तस्तत्क्षणादेव[8] राम एव भवेन्मुने।
श्रद्धधानस्य ते प्रोक्तं[9] श्रीरामनवमीव्रतम्।।9।।
सर्वलोकहितार्थाय पवित्रं पापनाशनम्।[10]
लौहेन निर्मितं चापि शिलया दारुणापि वा।।10।।
येन केन प्रकारेण यस्मै कस्मै क्रमान्मुने।[11]
चैत्रशुक्लनवम्यां तु दत्वा विप्राय भक्तितः।।11।।
सर्वपापविनिर्मुक्तो भवेदेव न संशयः।
तस्मिन् दिने महापुण्ये स्नानदानादिकं मुने।।12।।
कृतं सर्वप्रयत्नेन यत्किंचिदपि भक्तितः।
महादानादितुल्यं स्याद्रामोद्देशेन यत्कृतम्।।13।।
वित्तसाठ्यन्न कर्तव्यं सर्वं कुर्यात्स्वभक्तितः।
तस्मिन् दिने महापुण्ये प्रातरारभ्य भक्तितः।।14।।

---

1. मज्जति। 2.समारूढा। 3. पच्यन्ते। 4.चीराम्बराणि। 5 वादयेत्। 6. दद्याद्देवाय। 7. अधिक पाठ – ब्राह्मणाय निवेदयेत्। अनेन विधिना कुर्यात्।।8. मुच्यते तत्क्षणादेव। 9. श्रद्धया त्वयि संप्रोक्तं।10. यः कुर्याद्विधिवत्प्राज्ञो राम एव न संशयः। 11. च वा मुने।

जपेदेकान्त आसीनो यावत्स्याद्दशमीदिनम्।
तेनैव स्यात्पुरश्चर्य्या दशम्यां भोजयेद् द्विजान्।।15।।
भक्ष्यभोज्यैर्बहुविधैर्दद्याच्छक्त्या च दक्षिणाम्।
कृतकृत्यो भवेत्तेन सद्यो रामः प्रसीदति।।16।।
तूष्णीं तिष्ठन्नरो याति पुनरावृत्तिवर्जितः।
द्वादशाब्दशतेनापि[1] यत्पापं नापपद्यते[2]।।17।।
विलयं याति तत्सर्वं श्रीरामनवमीदिने।
मुमुक्षवोऽपि सदा राम श्रीरामनवमीव्रतम्।।18।।
न त्यजन्ति सुरश्रेष्ठो देवेन्द्रोऽपि विशेषतः[3]।
तस्मात्सर्वात्मना सर्वे कृत्वैव नवमीव्रतम्[4]।।19।।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
अथ पूजां प्रवक्ष्यामि ब्रह्मोक्तां सुरपूजिताम्।20।।
सीते देवि नमस्तुभ्यं रामचन्द्रप्रिये सदा।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वरदा भव शोभने।।21
कौशल्ये प्रणमामि त्वां राममातः सुशोभने।
अदिते त्वं गृहाणार्घ्यं वरदा भव सर्व्वदा।।22।।
कैकेयि प्रणमामि त्वां रावणस्यान्तकारिणि।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वरदा भव शोभने।।23।।
सुमित्रे त्वां नमस्यामि शेषमातर्नमोऽस्तु ते।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वरदा भव शोभने।।24।।
अजपुत्र महाबाहो श्रीमद्दशरथ प्रभो।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रामतात नमोऽस्तु ते।।25।।
सीतापते नमस्तुभ्यं रावणस्यान्तक प्रभो।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कौशल्यानन्दवर्द्धन।।26।।
दाशरथे नमस्यामि रामभक्तिन् नृपात्मज।
मया समर्पितं तुभ्यमर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम्।।27।।
लक्ष्मण त्वं महाबाहो इन्द्रजिद्वधकारक।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं [5]सुमित्रातनय प्रभो।।28।।
नारिकेरैश्च कूष्माण्डैर्मातुलङ्गैः सपूगकैः।
दद्यादर्घ्यं सुरेशाय रामाय वरदायिने।।29।।

---

1. द्वादशाब्दकृतं पापं। 2.नानुमुच्यते। 3.देवेन्द्रास्वानशंसयः। 4.तद्वत्सर्वात्मना सर्वैः कृतञ्च नवमीव्रतम्। 5 यहाँ से 8 चरण 'अ' में खण्डित।

हनुमद् वायुतनय रावणस्यान्तकारक।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रामभक्तिं प्रयच्छ मे।।30।।
लब्ध्वा सुतौ त्वया राम प्राप्तं सुखमनूत्तमम्।
तथा मां सुखितं देव कुरुष्व त्वां नमाम्यहम्।।31।।
अवतीर्य्य त्वया देव वायुपुत्रासुरान्तक।
अवतारय मां भक्तं भवसिन्धुसुदुस्तरात्।।32।।
पापिनो हि नो रामं प्राप्यन्ते चात्र संशयः।
चैत्रशुक्लनवम्यान्तु भुञ्जन्ते ये नराधमाः।।33।।
पच्यन्ते रौरवे घोरे विष्णुना भाषितं पुरा।
नवमी चैत्रमासस्य पुनर्वसुयुता भवेत्।।34।।
उपवासः सदा देव अश्वमेधशताधिकः।
बुधवारो भवेत्तत्र अतिगण्डस्तथैव च।।35।।
पूजयन्ति तथा रामं यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
मुमुक्षुणापि कर्तव्यं गृहस्थेनापि वा पुनः।।36।।
क्षत्रियेण च वैश्येन शूद्रेणापि महामुने।।
चाण्डालेनापि कर्तव्यं व्रतमेतदनुत्तमम्।।37।।
व्रतं ये नैव कुर्वन्ति मानवाः काममोहिताः।
ते यान्ति नरकं घोरं शतकल्पावधि ध्रुवम्।।।38।।
भ्रूणहत्या च यत्पापं सुरापानाच्च यद्भवेत्।
तत्पापं कोटिगुणितं जयन्त्यां भोजनाद्भवेत्।।39।।
गवां वधे च यत्पापं स्त्रीवधे यत्प्रजायते।
कृतघ्नस्यापि यत्पापं संसारे संभवेन्मुने।।40।।
तत्पापं कोटिगुणितं जयन्त्यां भोजनाद् भवेत्।
काकमांसं गवीमांसं शुनश्चापि नरस्य च।।41।।
भक्षयित्वा च यत्पापं जयन्तीभोजनाद् भवेत्।
ये कुर्वन्ति नरा नित्यं जयन्तीव्रतमुत्तमम्।।42।।
कुलकोटिसमायुक्तं यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन व्रतमेतत् समाचरेत्।
अकुर्वन् यान्ति निरयं सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।43।।

अगस्तिरुवाच

पूजाविधानं वक्ष्यामि कथितं नारदेन यत्।

वाल्मीकाय मुनीन्द्राय द्वारपूजादिकं तथा।।44।।
आकर्णय मुनिश्रेष्ठ सर्वाभीष्टफलप्रदम्।
श्रीरामद्वारपीठाङ्गपरिवारांँस्तथा स्थितान्।।45।।
ये प्रोक्तास्तानिह स्तौमि तन्मूलाः सिद्धयो यतः।
वंदे गणपतिं भानुं तिलकं स्वामिनं शिवम्।।46।।
क्षेत्रपालं तथा धात्रीं [1]विधातारमनन्तरम्।
गृहाधीशं गृहं गङ्गां यमुनां कुलदेवताम्।।47।।
प्रचण्डचण्डा च तथा शंखपद्मनिधी अपि।
वास्तोष्पतिं द्वारलक्ष्मीं गुरुं वागधिदेवताम्।।48।।

एता वै द्वारदेवताः पूज्याः। महामन्त्रककालागुरुद्रव्याभ्यान्नमः।

आधारं शङ्खं कूर्मं शेषं सवासुकिम्।
सुधार्णवं श्वेतद्वीपं कल्पवृक्षं मणिमण्डपम्।।49।।

अश्वं विमानं सिंहासनम्। आरक्तपद्मं धर्मादींश्चसत्त्वादिकाँश्च। अर्द्धचन्द्राग्नि-विमलोत्कर्षिणी-क्रिया-योगा-ईशानाः प्रसिद्धसत्त्वा। ईशानायै सर्वात्मने योगपीठात्मने नमः।

यजामहेत्विष्टौ रामौ ह्रीमानात्मनौ व्यवस्थितौ।
ससीताय रामाय वषट् नेत्रत्रयाय च।।50।।
रां रामाय नमो राममर्चयेन्मनुना ततः।
ह्रीमाद्यं ससीतायै स्वाहान्तोऽयं षडक्षरः।।51।।
ऐं मन्त्रस्वरूपाय नमो ज्योतिषेन्द्राय नमः।
आत्मान्तरात्ममनसोत्पत्यै ज्ञानात्मने नमः।।52।।

आग्नेयात् प्रवृत्यै प्रतिष्ठायै विद्यायै ईशान्यै वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नायानिरुद्धाय शान्त्यै प्रकृत्यै रत्यै प्रीत्यै नमः।

अग्रे हनूमान् जाम्बवान् सुग्रीव विभीषण अङ्गद शत्रुघ्न, धृष्टि जय विजय राष्ट्र सुराष्ट्रवर्द्धन अशोक सुमन्त द्वारपालाः रामरूपाः।

वज्र शक्ति दण्ड खड्ग पाश गदा त्रिशूल अम्बुज चक्र एतान्यस्त्राणि।

वसिष्ठ वामदेव गौतम नल नील गवय गवाक्ष गन्धमादन शरभ मैन्द द्विविदादयः।

---

1. विधातारं गृहाधिपम्। गृहं गङ्गाञ्च यमुनां कुलदेवीं प्रचण्डकम्। पद्मनिधिं वास्तुद्वारं निधिं लक्ष्मीं वाग्देवताम्।

शङ्ख चक्र गदा पद्म शार्ङ्ग बाण गरुड विष्वक्सेन एते विष्णुरूपाः। सर्वस्मै विष्णुरूपाय नमः। ज्योतिषे विष्णुरूपिणे।

मनोवाक्कायजनितं कर्म यच्च शुभाशुभम्।
तत्सर्वं भूतये भूयान्नमो रामाय देहिने।। 53

एतद्रहस्यं परमं प्रत्यूषःसु समासतः।
यः पठेद्रामामाहात्म्यं विद्यैश्वर्य्यनिधिर्भवेत्।।54।।

ऋणध्वंसश्च सौभाग्यं दारिद्र्यञ्च निकृन्तयेत्।
उपद्रवाँश्च शमयेत् सर्व्वलोकं वशं नयेत्।।55।।

यः पठेत्प्रातरुत्थाय धर्म्मार्पणधिया सदा।
स याति परमं ब्रह्म पुनरावृत्तिवर्जितम्।।56।।

इत्यगस्त्यसंहितोक्ता रामनवमीकथा समाप्ता।

ॐ यदक्षरेत्यादि।[1]

**ॐ नमः ससीतरामलक्ष्मणाभ्याम्।**

# परिशिष्ट 4

## श्रीमदगस्त्यसंहितान्तर्गत श्रीरामानन्दाचार्यजन्मोत्सवकथा

### अथ एकत्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः

सिंहासने समासीनः सहितः सीतयानुजैः।
अतसीकुसुमश्यामो रामो विजयतेऽनिशम्॥1॥
स्वाश्रमे संश्रितं शिष्यैः प्रातर्हुतहुताशनम्।
बोधयन्तं परं तत्त्वं तमगस्त्यं महामुनिम्॥2॥
कृतक्षणः सुतीक्ष्णस्तमुपागम्य कृताञ्जलिः।
पश्यन्वनानि रम्याणि विचरंश्च महामुनिः॥3॥
भाविनो नृन् कलौ बुध्वा विषयासक्तचेतसः।
अज्ञानाल्पायुषः श्रीमच्छ्रीशांघ्रिविमुखान्भुवि॥4॥
संसारार्णवसंमग्नान् कृपालुर्मुनिसत्तमः।
उद्धर्तुकामस्तांस्तस्मात् पृष्ठवान् श्रेय उत्तमम्॥5॥

सुतीक्ष्ण उवाच

भगवन्! मुनिशार्दूल! सर्वज्ञ! कलशोद्भव!
नृणां श्रेयसि मूढानां श्रेयश्चिन्तय सुव्रत!॥6॥
उपायं वद निश्चित्य तेषां श्रेयो यथा भवेत्।
परोपकारनिरताः साधवो हि कृपालवः॥7॥

अगस्त्य उवाच

कुम्भजोऽथनिशम्येत्थं वाचं मुनिसमीरिताम्।
अल्पाक्षरमनल्पार्थां धर्मसंप्रश्नभूषिताम्॥8॥

प्रसन्नवदनाम्भोजः प्रशस्य मुनिपुङ्गवः।
तं प्रत्युवाच संप्रीतो वाचं हृदयहर्षणीम्।।9।।
श्रूयतामितिहासोऽयं कुमारेभ्यो मया श्रुतः।
मुनिवर्यो महाभागो जगतामुपकारकः।।10।।
हिरण्यगर्भसम्भूतो मतिमान् वाग्विदां वरः।
सर्वलोकजनान् दृष्ट्वा विमूढान् विमुखाञ्छ्रुतेः।।11।।
चिन्तयन् वत तच्छ्रेयो दिव्यं धाम जगाम सः।
कृपालुरच्युतस्याद्यं सिद्धिभिः सिद्धभूषणम्।।12।।
तत्र सिंहासनं दिव्यमध्यासीनं जगत्प्रभुम्।
निजैर्वरायुधैः सर्वैर्मूर्त्तिमद्भिरुपासितम्।।13।।
पार्षदप्रवरैः कृत्स्नैर्महार्हाम्बरभूषणैः।
पद्मपत्रविशालाक्षं पद्मया पद्मनेत्रया।।14।।
उपविष्टं जगद्धेतुं नारदोऽपश्यदच्युतम्।
दिव्याम्बरधरं देवं दिव्यभूषणभूषितम्।।15।।
प्रणतस्तं प्रतुष्टाव हृष्टात्मा जगदीश्वरम्।
जगद्योनिरयोनिस्त्वं व्यक्तोऽव्यक्ततरो विभुः।।16।।
कर्त्रे विश्वस्य संभर्त्रे संहर्त्रे ते नमोनमः।
आदिमध्यान्तहीनाय प्रभवे परमात्मने।।17।।
नमस्ते विश्वरूपाय नमस्ते विश्वबन्धवे।
विश्वम्भर! नमस्तेऽस्तु विश्वनाथ! कृपाम्बुधे!।।18।।
संसारेऽस्मिन् महाघोरे पापाभिरतचेतसाम्।
जन्तूनां का गतिर्देव कर्मणा भ्रमतामिह।।19।।
मुक्तिस्तेषां कथं श्रीश! भवेद्धर्मे कथं रतिः।
कृपाकूपार भगवञ्जन्तूनुद्धर माधव।।20।।
श्रुतिस्मृत्युदिता धर्माः क्लेशसाध्या नृभिः सदा।
अतस्त्वं सुकरोपायं वद त्वद्भक्तिवर्धनम्।।21।।
सर्वबन्धविनाशाय मुक्तये प्राणिनां प्रभो!
प्रवक्ता त्वं हि धर्माणामविता जगतामपि।।22।।
इत्थमाकर्ण्य भगवान् वाचं मुनिसमीरिताम्।
तं प्रत्युवाच संप्रीतः शुचिस्मितमुखाम्बुजः।।23।।

मुनिवर्य! महाभाग! जगतां हितकारक!
मया जगद्धितायैव पुरैतदवधारितम्।।24।।
दिव्ये हि भारते वर्षे तीर्थराजे सुविश्रुते।
प्रयागे पुण्यसदने भवद्भिर्नित्यसूरिभिः।।25।।
सार्द्धमेवावतीर्याहं प्रणेष्ये मोक्षसाधनम्।
दृढसंसारबन्धस्य शातनं भक्तिवर्द्धनम्।।26।।
सुबोधं सुकरं सर्वैर्धर्ममार्गं सुखावहम्।
वेदवेदान्तसच्छास्त्रसारभूतं सदाश्रयम्।।27।।
तत्र तत्रावतीर्णास्तु भवन्तो वीतकल्मषाः।
मदुक्तस्योपदेष्टारः प्राणिभ्यो तत्परायणाः।।28।।
भविष्यन्ति महात्मानो जगदुद्धारहेतवः।
सुशीला धर्मनिरता जगतामुपकारकाः।।29।।
ये ग्रहीष्यन्ति सन्मार्गे प्राणिनो भक्तितत्पराः।
स्यादनायासतो मोक्षस्तेषामत्र न संशयः।।30।।
वाणीपीयूषमास्वाद्य क्षणमासीद्धरेर्मुनिः।
मग्नः सुखसुधांभोधौ विनीतो गतसंशयः।।31।।

निशम्य तद्वाक्यममोघमद्भुतं
हिरण्यगर्भाङ्गसमुद्भवो मुनिः ।
प्रहृष्टरोमवलिभूषिताकृतिः
कृती कृतज्ञः कृतकृत्य ईशितुः।।32।।
दृढव्रतस्याथ विनम्रकन्धरः
स्मरन् सुरेशस्य विभोः प्रतिश्रुतम्।
प्रणम्य तं देववरं रमापतिं
महाविभूतेर्निरगात्ततः सुधीः।।33।।
सुवादयन् दिव्ययशोऽथवल्लकीं
हरेः स्वरब्रह्मविभूषितानसौ।
गायंश्च लोके विचचार सर्वतः
सुरासुरेन्द्रैरभिपूजितो मुनिः।।34।।
मुनीश्वरे देवऋषौ विनिर्गते
सुरैरपीड्यो जगतामधीश्वरः।
रेमे रमेशो रमया स्मितानन:
प्रभूतभूतैर्निजदिव्यधामनि ।।35।।

इति श्रीमदगस्त्यसंहितायां भविष्यखण्डेऽगस्त्यसुतीक्ष्णसम्वादे श्रीरामानन्दाचार्यावतारोपक्रमे श्रीरामनारदसम्प्रश्नोत्तरं नामैकत्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥१३१॥

## अथ द्वात्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः

व्यतीते द्वापरे पुण्ये श्रीमद्भगवतोज्झिते।
कलौ सत्त्वहरे पुंसां प्रवृत्तेऽधर्मवर्द्धके॥1॥
जनेऽधर्मरुचौ नित्यं शौचाचारविवर्जिते।
मोक्षसाधनमार्गेभ्यो विमुखे पशुतां गते॥2॥
मन्दे मन्दमतौ शश्वदल्पभाग्येऽल्पजीवने।
तत्रत्ये पापनिरते महत्सङ्गविवर्जिते॥3॥
प्रवर्धमानानभितो वादैर्निर्जित्य नास्तिकान्।
आचार्यैर्भगवद्धर्मो वेदवेदान्तपारगैः॥4॥
स्थापितोऽपि महायोगैर्वृद्धिं नैव गमिष्यति।
विधातुं सत्यसन्ध! सुरेड्यो निजभाषितम्॥5॥
वीक्ष्य विष्णुः कृपासिन्धुः प्रबुद्धं तादृशं कलिम्।
सदृशांश्च जनान् सर्वान् दुर्मतीन् क्लेशसंयुतान्॥6॥
मनःकर्ताऽवताराय स्मृत्वाथो स्वं प्रतिश्रुतम्।
खं नभो वेद वेद प्रमिते वर्षे गते कलौ॥7॥
कालिन्दीजाह्नवीसङ्गशोभिते देवपूजिते।
तीर्थराजे महापुण्ये प्रयागे तीर्थ उत्तमे॥8॥
गृहे श्रीपुण्यसदनद्विजातेर्भूरिकर्मणः।
योगिनो योगयुक्तस्य कान्यकुब्जशिरोमणेः॥9॥
पतिसेवापरा तस्य सुशीला गृहिणी ततः।
माघकृष्णस्य सप्तम्यां शुभधर्मप्रवर्तके॥10॥
सप्तदण्डोद्गते सूर्ये सिद्धयोगयुजि प्रभुः।
नक्षत्रे त्वाष्ट्रदैवत्ये कुम्भलग्ने शुभग्रहे॥11॥

एवं सर्वगुणोपेते देशे काले च माधवः।
गुण्ये पुण्ये शरण्यः स शरणागतवत्सलः।।12।।
आविर्भूतो महायोगी द्वितीय इव भाष्करः।
रामानन्द इति ख्यातो लोकोद्धरणकारणः।।13।।
अष्टमेऽब्दे चोपवीतं जातं तस्य तदा ह्यसौ।
ब्रह्मचर्यं गृहीत्वा तु विद्याभ्यासं करिष्यति।।14।।
वर्षे द्वादशे जाते काश्यां गत्वा पुनः स्वयम्।
वेदवेदाङ्गशास्त्राणि पुराणादि पठिष्यति।।15।।
आचार्यलक्षणैर्युक्तं वेदवेदान्तपरागम्।
श्रीसम्प्रदायश्रेष्ठञ्च जनोद्धारपरं सदा।।16।।
विज्ञाय राघवानन्दं लब्ध्वा तस्मात् षडक्षरम्।
रहस्यत्रयवाक्यार्थं तात्पर्यार्थं च सन्मतम्।।17।।
आचार्यलक्षणैर्दिव्यैर्लक्षितो वै भविष्यति।
प्रवक्ता सर्वधर्माणामनुष्ठाता च कर्मणाम्।।18।।
रक्षिता धर्मसेतूनामुपदेष्टा महायशाः।
शश्वद्वैष्णवधर्माणां महाकीर्तिरुदारधीः।।19।।
प्रसन्नवदाम्भोजो विशालाक्षो महाभुजः।
कृपालुस्सर्वजीवानामितरेषां च नित्यशः।।20।।
संसाराम्भोनिधेर्घोरात् समुद्धारपरायणः।
वेदवेदान्तनिरतस्सर्वशास्त्रविशारदः ।।21।।
कामान् पूरयिता नृणां कविः कल्पद्रुमो यथा।
गुणवान् दयितः पूज्यः सर्वज्ञो विजितेन्द्रियः।।22।।
शोभिष्यति धर्मरतैः सद्भिः परिवृतोऽनिशम्।
लोके पूर्णकलः खे वै शीतांशुर्भगणैरिव।।23।।
सुशीलः समदृक् शान्तो दान्तः श्रीमान् जगद्गुरुः।
पुनः सत्सम्प्रदायस्य वर्त्तयिता मुनीश्वरः।।24।।
कृपया यस्य लोकेऽस्मिन् जनाः सर्वे निरामयाः।
श्रीरामभक्तिनिरताः सदा धर्मपरायणाः।।25।।
तादृशस्य महाबुद्धेर्योगिवर्यस्य सत्कवेः।
गुणान् कात्स्न्र्येन संवक्तुं कविः कः क्षमतेऽधुना।।26।।

तेऽथाप्यवतरिष्यन्ति भगवन्मतकोविदा:।
स्वयम्भूप्रमुखा: सर्वे महान्तो नित्यसूरय:।।27।।
इङ्गितज्ञा हरेराज्ञां वहन्त: शिरसा मुदा।
नानादेशेषु वर्णेषु तत्तत्कालेऽर्कसन्निभा:।।28।।
आयुष्मन्! कृत्तिकायुक्तपूर्णिमायां धनौ शनौ।
स्वयंभू: कार्तिकस्याद्धाऽनन्तानन्दो भविष्यति।।29।।
योगनिष्ठ: सदा धीमान् सदाचारपरायण:।
शिष्य आचार्यवर्यस्य रामानन्दस्य धीमत:।।30।।
जात: सुरसुरानन्दो नारदो मुनिसत्तम:।
वैशाखसितपक्षस्य नवम्यां स वृषे गुरौ।।31।।
शुक्रे वरुणभे योगे शीलरत्नाकरो महान्।
मन्त्रमन्त्रार्थसन्निष्ठो गुरुभक्तिपरायण:।।32।।
तस्यामेव तुलालग्ने तादृशीन्दुरिवोग्रधी:।
शम्भुरेव सुखानन्द: पूर्वाचार्यार्थनिष्ठक:।।33।।
व्यतिपातेऽनुराधाभे शुक्रे मेषे गुणाकरे।
वैशाखशुक्लपक्षस्य तृतीयायां महामति:।।34।।
कुमारो नरहरियान्दो जात उदारधी:।
वर्णाश्रमकर्मनिष्ठ: शुभकर्मरत: सदा।।35।।
वैशाखकृष्णसप्तम्यां मूले परिघसंयुते।
बुधे कर्केऽथ कपिलो योगानन्दो जनिष्यति।।36।।
योगनिष्ठो महायोगी सत्सेवितपदाम्बुज:।
सदा वैष्णवधर्माणामुपदेशपरायण: ।।37।।
मनु: पीपाभिधो जात उत्तराफाल्गुनीयुजि।
पूर्णिमायां ध्रुवे चैत्र्यां धनवारे बुधस्य च।।38।।
निष्ठा तदीयकैङ्कर्ये सततस्तस्य महात्मन:।
नक्षत्रे शशिदैवत्ये चैत्रकृष्णाष्टमीतिथौ।।39।।
प्रह्लादोऽपि कविरस्तु कुजे सिंहे च शोभने।
जातो वेदान्तसन्निष्ठ: क्षेत्रवासरत: सदा।।40।।
भवानन्दोऽथ जनको मूले परिघसंयुते।
वैशाखकृष्णषष्ठ्यान्तु कर्के चन्द्रे जनिष्यति।।41।।

रामसेवापरो नित्यं स महात्मा महामतिः।
भीष्मः सेनाभिधो नाम तुलायां रविवासरे।।42।।
द्वादश्यां माघकृष्णे तु पूर्वभाद्रपदे च भे।
तदीयाराधने सक्तो ब्रह्मयोगे जनिष्यति।।43।।
श्रीमाघस्यासिताष्टम्यां वृश्चिके शनिवासरे।
धनाभिधो बलिः साक्षात् पूर्वाषाढयुते शिवे।।44।।
वरो भक्तिमतां जातस्तदीयाराधने रतः।
सदाचारपरो धीमान् गुरुपादाम्बुजार्चकः।।45।।
तत्त्वज्ञो गालवानन्दो जात एकादशीतिथौ।
चैत्रे वैयासकिश्चन्द्रे कृष्णे लग्ने वृषे शुभे।।46।।
सर्वदा ज्ञाननिष्ठोऽयमुपदेशपरायणः।
वेदवेदान्तनिरतो महायोगी महामतिः।।47।।
चैत्रशुक्लद्वितीयायां शुक्रे मेषेऽथ हर्षणे।
यम एव रमादासस्त्वाष्ट्रे प्रादुर्भविष्यति।।48।।
पालनं वैष्णवाज्ञानां कुर्वन् नित्यमतन्द्रितः।
धर्ममेवाचरँल्लोके धर्माधीश उदारधीः।।49।।
चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां गुरौ कर्के ध्रुवान्विते।
उत्तराफाल्गुनी संज्ञे जाता पद्मावती सती।।50।।
श्रीमदाचार्यसन्निष्टा सा पद्मेवापरा सदा।
धर्मज्ञा धर्मनिरता गुरुभक्तिपरायणा।।51।।
एवमेतादृशैस्तैस्तैः शिष्यैर्द्वादशभिर्महान्।
शोभिष्यत्यर्चितो देव्या पद्मावव्या च सन्ततम्।।52।।
श्रीमानाचार्यवर्योऽयं रामानन्दो महामतिः।
शिष्योपशिष्यैरन्यैश्च शोभितोऽहर्दिवं भुवि।।53।।
पूज्यो ध्येयश्च जगतां रामरूपो जगद्गुरुः।
हेतुः कल्याणमार्गस्य शुभदो ज्ञानदोऽनिशम्।।54।।
यस्य दर्शनमात्रेण स्मरणेन सदा क्षितौ।
नाम व्याहरणाद्धीना नरा मुक्ता न संशयः।।55।।
यदीयमतमालम्ब्य मन्त्रमन्त्रार्थभूषितम्।
भूष्यते भूरियं लोकै राजितैर्मुनिवृत्तिभिः।।56।।

शरच्चन्द्रायते लोके कीर्तिर्यस्य महात्मनः।
विशदा पावनी पुण्या शृण्वतां पापनाशिनी॥57॥
हरिभक्तिप्रदा नृणां तथा ज्ञानप्रकाशिनी।
मोहान्धकारसंघप्रध्वंसिनी शुभदायिनी॥58॥
स एष भगवद्रूपो धर्मो विग्रहवानिव।
द्विषतानिह दुर्धर्षः सेवनीयः सतां सदा॥59॥
तज्जन्ममासर्क्षतिथौ तदीयै-
स्तदीयजन्मोत्सवमुत्सवोत्सुकैः ।
विधेयमेवं प्रतिवर्षमुत्तमं
विधानविज्ञैर्विधिना हि वैष्णवैः॥60॥
पूजोपहारै रुचिरैर्यथोचितं
देवं समभ्यर्च्य सशिष्यसङ्घम्।
वाद्यैर्मृदङ्गादिभिरद्भुतैः परै-
र्नृत्यैस्तथा गीतवरैः प्रसादयेत्॥61॥
तदीयजन्मोत्सवसत्कथाभि-
स्तत्तोषहेतुस्तुतिभिस्तथैव ।
अन्यैस्तदीयाचरितैर्व्रतादिभि-
र्निस्तन्द्रिरेवं गुरुभक्तितत्परः॥62॥
एवं स कुर्वन् विधितस्तदर्चनं
तत्तोषहेतुं च महोत्सवं बुधः।
निरालसो भक्तियुतो लभेत
स्वाभीष्ठसिद्धिर्महती न संशयः॥63॥
निशम्य तद्वाक्यमथो महात्मनो
मुनेः प्रहृष्टः कलशोद्भवस्य।
मुनिः सुतीक्ष्णः समुतीक्ष्णबुद्धि-
र्विधिं च प्रष्टा हि तदर्चने पुनः॥64॥

**इतिश्रीमदगस्त्यसंहितायामगस्त्यसुतीक्ष्णसंवादे भविष्यखण्डे श्रीरामानन्दाचार्यावतारोपाख्यानं नाम द्वात्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः॥१३२॥**

## अथ त्रयस्त्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः

तज्जन्म पावनं पुण्यं कथितं परमं त्वया।
तदर्चनविधिं मह्यं वक्तुमर्हस्यथाधुना।।1।।
जगतामुपकर्ता त्वं दयालुर्धीमतां वरः।
समभ्यर्च्य जना येनाचार्यं श्रेयः समाप्नुयुः।।2।।
श्रूयतामिति चामन्त्र्य कथयिष्यति कुम्भजः।
अम्बुजं वर्त्तुलाकारं द्वादशदलसंयुतम्।।3।।
सुव्यक्तं तैर्दलैर्व्यक्तैर्दर्शनीयं सुशोभनम्।
तन्मध्ये कर्णिकायान्तु यन्त्रषट्कोणमालिखेत्।।4।।
तत्राचार्यवरं देवं रामानन्दमुदारधीः।
विन्यसेत् साङ्गमर्काभं तं दिव्यगुणशालिनम्।।5।।
सपूर्वदिशमारभ्य दलेषु क्रमशो न्यसेत्।
अनन्तानन्दमुख्यांस्तान् द्वादशादित्यसन्निभान्।।6।।
यन्त्रमेवं सुसम्पाद्य तदर्चनपरायणः।
पूजयेत्तत्र तान् सर्वानर्घ्यपाद्यादिभिर्वरैः।।7।।
पूजोपहारैः सकलैर्भक्त्या परमया युतः।
एकाग्रमानसो भूत्वा तमेव मनसा स्मरन्।।8।।
नम आचार्यवर्याय रामानन्दाय धीमते।
मोक्षमार्गप्रकाशाय चतुर्वर्गप्रदाय च।।9।।
इति मन्त्रविधानेन समर्चेद्विधिनार्चकः।
अर्घ्यपाद्यादिभिस्तैस्तैर्गन्धपुष्पाक्षतैः फलैः।।10।।
नैवेद्यैरुत्तमैः श्रेष्ठैः षड्रसैः सुमनोहरैः।
ताम्बूलैर्दक्षिणाभिस्तं तोषयेन्नृत्यगीतिभिः।।11।।
एवं दलेषु शिष्यांस्तान् पूजयेदमलात्मना।
प्रणवादिचतुर्थ्यन्तनाममन्त्रैर्विधानतः ।।12।।
स्तुवीत स्तुतिभिर्देवं सशिष्यं भक्तितत्परः।
ज्ञानविज्ञानदीपं तमुदारयशसं प्रभुम्।।13।।
जगद्गुरो! नमस्तेऽस्तु हरये विश्वबन्धवे।
मोक्षमार्गप्रकाशाय प्रणतार्तिहराय ते।।14।।

सपार्षदाय साङ्गाय सदा पावनकीर्तये।
नमस्तेऽगाधबोधाय प्रणताभीष्टदायिने।।15।।
सत्यव्रताय शान्ताय दान्ताय जगदात्मने।
नमोऽनन्ताय महते निर्जिताशेषविद्विषे।।16।।
विधृतज्ञानमुद्राय योगिने योगशालिने।
नमस्तेऽस्तु दयासिन्धो! जगज्जन्मादिहेतवे।।17।।
भीमे भवार्णवेऽनन्य: शरण: पतित: प्रभो।
पादपद्मद्वयं तेऽहं व्रजामि शरणं सदा।।18।।
इत्यभिष्टूय तं धीमान् दद्यात्पुष्पाञ्जलिं मुदा।
प्रणमेद् दण्डवद्भूमौ साष्टाङ्गं विधिवत्तत:।।19।।
अथ जन्मकथान् तस्य शृणुयात् पापनाशिनीम्।
गदतां शृण्वतामाशु विशदां तां शुभप्रदाम्।।20।।
एवं मुने! त्वं जानीहि तदर्चनविधिं महत्।
लोकेऽनेन विधानेन तमभ्यर्च्यमहामुनीम्।।21।।
प्राप्स्यन्ति च क्षितौ लोकावाञ्छितार्थमसंशयम्।
नरास्तद्भावनायुक्ता: प्रणताविशदाशया:।।22।।
मुने! स भगवानित्थं सुतीक्ष्ण! जगदीश्वर:।
सत्यसन्धोहरिर्जातो विधास्यति शुभं नृणाम्।।23।।
चार्वाकादिमतारुढान् बहुधा दुर्मतीन् कलौ।
करिष्यति नरान् जित्वा रामभक्तिपरायणान्।।24।।
यत्प्रतापवशादेव भविष्यन्ति कलौ नरा:।
धर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठा मोक्षमार्गरता: सदा।।25।।
तस्मिन् महीतलं याते नृणां किं वर्णयाम्यहम्।
भाग्यं साक्षाद्धरौ प्रीते सच्चिदानन्दविग्रहे।।26।।
धन्यास्तदातन्मुखपङ्कजं नरा
द्रक्ष्यन्ति ये तापहरं च पश्यताम्।
श्रोष्यन्ति वाचं परमामृतायनां
भूरिभाग्या वत निर्मलाशया:।।27।।

**इति श्रीअगस्त्यसंहितायां सुतीक्ष्णागस्त्यसम्वादे भविष्यखण्डे साङ्गसशिष्यश्रीरामानन्दाचार्ययन्त्रार्चनप्रकारो नाम त्रयस्त्रिंशदुत्तरशततमोऽध्याय: ।।१३३।।**

## अथ चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः

शिष्यैर्द्वादशभिः श्रीमानथैतैरर्कसन्निभैः।
सूर्यैर्द्वादशभिर्नित्यं यथा विष्णुः प्रतापवान्।।1।।
विराजमानः सततं पर्यटन्नवनीमिमाम्।
द्वारकादिषु तीर्थेषु तत्र तत्र जगद्गुरुः।।2।।
विद्विषां जित्वरो वादैः श्रुतिस्मृतिसमुत्थितैः।
विपरीतान् वशीकुर्वन् कुर्वन् शिष्यांश्च तानथ।।3।।
षडक्षरं मन्त्रराजं तेभ्यश्चोपदिशन् मुनिः।
मन्त्रार्थं श्रावयन्नित्यं मन्त्रज्ञैस्तैरुपासितः।।4।।
आसमुद्रं चतुर्दिक्षु विचरन् धर्मतत्परः।
कर्ता वै बहुधा लोकं रामभिरतमुत्तमम्।।5।।
लेष्यन्ति नास्तिकास्तस्य प्रतापहततेजसः।
तमोपहे यथासूर्येऽभ्युदिते तारकागणः।।6।।
एवमेवात्र सुतीक्ष्ण! विचरन् सर्वतो मुनिः।
श्रेयः सम्पादयन् नृणां हरन्नज्ञानजं तमः।।7।।
राजिष्यते स्वयं स्वीयैर्भानुभिर्भानुमानिव।
असंख्येयैर्गुणैः शुभ्रैर्जगत्पालनतत्परः।।8।।
प्रकृत्या शीलसम्पन्नो दयारत्नकरो महान्।
धर्मत्राणाय लोकेऽस्मिन्नवतीर्णः परः पुमान्।।9।।
महाव्रतधरो धीमान् सर्वविद्याविशारदः।
निस्पृहः सर्वकामेभ्यः स्वात्मारामोमहामुनिः।।10।।

रामानन्द उदारकीर्तिरतुलः श्रीयोगिवर्याग्रणीः
पाखण्डाद्रिविभेदनाशनरहो धर्माभिसंवर्धनः।
श्रीमान् दिव्यगुणालयो निजयशःस्तोमाङ्कितक्ष्मातलः
सिद्धध्येयपदाम्बुजो विजयतेऽज्ञानान्धकारापहः।।11।।

वेदार्थसम्पादकसम्मुखाम्बुज-
स्त्रितापसंहारकचारुलोचनः।
भवाब्धिसन्तारकपादपङ्कजो
निजेष्टपूर्त्यार्पितकल्पपादपः।।12।।

विधूतशत्रुर्धृतिमान् धरातलं
यशस्समूहैर्विदधत् सुनिर्मलम्।
प्रकाशमानात्मविभूतिभूषितः
प्रभूतविद्याप्रभवः प्रभाववान्॥13॥
प्रतापसन्तापितशत्रुमण्डलः
सुसद्यशोऽलंकृतभूमिमण्डलः।
समीहिताशेषजगत्सुमङ्गलः
सदर्चनीयोऽखिलमङ्गलायनः॥14॥
सत्सम्प्रदायाम्बुजभास्करोऽग्रणी
विनीतनीताखिलवाञ्छितार्थकः।
निगूढवेदार्थविदीपनस्तै
रुदारवृत्तैर्महितो महात्मभिः॥15॥
गुणेन शीलेन श्रुतेन कर्मणा
प्रकाशमानः किरणैर्यथा रविः।
हरंस्तमो नैशमुदारदीधिति-
र्विनिर्जिताशेषसपत्नसंहतिः॥16॥
करोतु नोऽदभ्रदयोधिमङ्गलं
सपार्षदो दर्शितभूर्यनुग्रहः।
गृहीतधर्मायतनाकृतिः कृती
कृतार्थयंल्लोकमिमं चराचरम्॥17॥
उपप्लुतं धर्मविरोधिभिर्जगत्-
सनाथमाद्योविदधत्कृपानिधिः।
विधत्सुरस्याघनिवर्हणं यश-
स्तनोतु नोऽजस्रमसौ सुमङ्गलम्॥18॥
जगत्प्रतीपानभितोनिरस्य-
श्चकार धर्माभिरतं सतां प्रभुः।
अशेषसत्पूजितपादपङ्कजः
सुमङ्गलं नो वितनोतु सर्वदा॥19॥

**इति श्रीअगस्त्यसंहितायां भविष्यखण्डे श्रीरामानन्दाचार्य-दिग्विजयवर्णनं नाम चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः॥१३४॥**

## अथ पञ्चत्रिंशोत्तरशततमोऽध्याय:

रामानन्दमहं वन्दे योगिध्येयाङ्घ्रिपङ्कजम्।
उदारयशसं देवं शान्तमूर्तिं शुभप्रदम्।।1।।
अष्टोत्तरशतं वक्ष्ये नाम्नां यस्य महात्मन:।
यैरिज्यमानो भगवान् कामानाशु प्रदास्यति।।2।।
पठतां पठितैर्ध्यातैर्ध्यायतां शृण्वतां श्रुतै:।
शुभप्रदै: सतां ग्राह्यैर्महापापप्रणाशनै:।।3।।
रामानन्दो रामरूपो राममन्त्रार्थवित्कवि:।
राममन्त्रप्रदो रम्यो राममन्त्ररत: प्रभु:।।4।।
योगिवर्यो योगगम्यो योजगज्ञो योगसाधन:।
योगिसेव्यो योगनिष्ठो योगात्मा योगरूपधृक्।।5।।
सुशान्त: शास्त्रकृत् शास्ता शत्रुजिच्छान्तिरूपधृक्।
समयज्ञ: शमी शुद्ध: शुद्धधी: शुद्धवेषधृक्।।6।।
महान् महामतिर्मान्यो वदान्यो भीमदर्शन:।
भयहृद् भयकृद् भर्त्ता भव्यो भवभयापह:।।7।।
भगवान् भूतिदो भोक्ता भूतेज्यो भूतभृद् विभु:।
ज्ञातज्ञेयोऽतिगम्भीरो गुरुज्ञानप्रदो वशी।।8।।
अमोघोऽमोघदृग्दान्तोऽमोघभक्तिरमोघवाक् ।
सत्य: सत्यव्रत: सभ्य: सत्प्रिय: सत्परायण:।।9।।
सुसिद्ध: सिद्धिद: साधु: सिद्धिभृत् सिद्धिसाधन:।
सिद्धसेव्य: शुभकर: सामवित् सामगो मुनि:।।10।।
पूतात्मा पुण्यकृत् पुण्य: पूर्ण: पूर्तिकरोऽघहा।
अर्च्योऽर्चक: कृती सौम्य: कृतज्ञ: ऋतुकृत् ऋतु:।।11।।
अजय्य: शीलवान् जेता विनेता नीतिमान् स्वभू:।
वाग्मी श्रुतिधर: श्रीमान् श्रीद: श्रीनिधिरात्मद:।।12।।
सर्वज्ञ: सर्वग: साक्षी सम: समदृशि: सदृक्।
शुभज्ञ: शुभद: शोभी शुभाचर: सुदर्शन:।।13।।
जगदीशो जगत्पूज्यो यशस्वी द्युतिमान् ध्रुव:।
इतीदं कीर्तिदं यस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।।14।।

अधीयताथ शृणुयाद्यश्चापि परिकीर्तयेत्।
अवाप्नुयच्छ्रियं लोके विपुलं श्रद्धया युतः।।15।।
अर्चेत् स्तवेन यो नित्यमुचारैः सुसम्भृतैः।
अनेन विधिवत्तस्य प्रसीदेत् स गुणाकरः।।16।।
तस्मिन् देवे प्रसन्ने तु न किञ्चित्तस्य दुर्लभम्।
इह लोके परत्रापि जगदीशे जगद्गुरौ।।17।।
श्रद्धया माघमासेऽर्चेत् सप्तम्यां तुं विशेषतः।
सम्वत्सरार्चनाज्जातमाप्नुयात् फलमुत्तमम्।।18।।
श्रद्धालवे सुशीलाय गुरुभक्तियुताय च।
प्रदिशेद् ब्रह्मनिष्ठाय वेदव्रतरताय च।।19।।
गोपनीयमिदं सद्भिः सदा सर्वप्रयत्नतः।
न देयं नास्तिकायाथ निन्दकाय गुरुद्रुहे।।20।।
सुपूजितेष्टप्रदपादपङ्कजः
समर्चकानां विदधातु मङ्गलम्।
सतामजस्रं जगदीश्वरो हरि-
र्यथाश्रितोऽसौ कलिकल्पपादपः ।।21।।
विराजतेऽयं तपसां प्रसूति-
र्गुणाकरः सच्चरितोद्विजार्यभूः।
ससज्जनाग्र्याभिश्रुतो वशँवदो
बृहद्व्रतश्चारुनृपावलीडितः ।।22।।

**इति श्रीअगस्त्यसंहितायां भविष्यखण्डे अगस्त्यसुतीक्ष्णसंवादे श्रीरामानन्दाचार्याष्टोत्तरशतनामार्चनमाहात्म्यवर्णनं नाम पञ्चत्रिंशोत्तर शततमोऽध्यायः।।१३५।।**

पाठकों को न्यूनतम मूल्य पर प्रामाणिक धार्मिक-ग्रन्थ उपलब्ध कराने के लिए 'महावीर मन्दिर प्रकाशन' अपने दायित्व का निर्वाह कर रहा है। अब तक 24 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। 1990 ई0 से धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीयता की शोध-पत्रिका 'धर्मायण' का भी प्रकाशन हो रहा है। अब तक इसके 78 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। महावीर मन्दिर से प्रकाशित पुस्तकों की सूची इस प्रकार है –
1. मारुति-चरितामृतम्
2. मारुतिशतकम्
3. जै जै सियाराम
4. संसार को भारत का सारस्वत अवदान
5. संक्षिप्त मारुति-स्तुति
6. श्रीमद्भगवद्गीता
7. भगवान् श्रीकृष्ण
8. स्तुति कौमुदी
9. बुद्धावताराय नमो नमस्ते
10. बृहत् सत्यनारायण पूजा प्रकाश
12. श्रीरुद्रार्चनपद्धतिः
13 दुर्गासप्तशती
14 हनुमान बाहुकम् का संस्कृत अनुवाद
15 हनुमत् कवचम्
16. श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड)
17. श्रीरामचरितमानस
18. मारुति-स्तुति
19. रामराज्य
20. जै बजरंगबली
21. रघुवंशम्
22. रामायण कथा
23. वाल्मीकि-रामायण केवल हिन्दी अनुवाद
24. श्रीमद्भागवत पुराण (दशम स्कन्ध मात्र) हिन्दी पद्यानुवाद

उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः
महावीर मन्दिर प्रकाशन
पटना
मूल्य अजिल्द : 50 रुपये
पुस्तकालय संस्करण 200 रुपये